

वर्ष : 2019



अंक : 38वाँ

नवकिरण

(अर्द्धवार्षिक)



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा, चण्डीगढ़

नवकिरण परिवार

पत्रिका का नाम	:	नवकिरण
प्रकाशन की अवधि	:	अर्द्धवार्षिक
वर्ष	:	2019
अंक	:	38वाँ
संरक्षक	:	श्री विशाल बंसल
प्रकाशन	:	श्री ध्रुव भोला
प्रबन्धन	:	श्री अवनीश कुमार श्रीमति पूजा सिंह मण्डल
सम्पादक	:	श्री कुमार शर्मा 'अनिल'
सह – सम्पादक	:	श्री राजेश 'पंकज' श्री संजीव कुमार श्री रविन्द्र सिंह
प्रकाशन स्थल	:	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा, लेखा भवन, प्लॉट नं 4 – 5, सैक्टर 33 – बी, चण्डीगढ़
मुद्रक	:	UNIQUE TRADERS
मूल्य	:	पाठकों की राजभाषा के प्रति निष्ठा



नवकिरण

(अर्द्धवार्षिक)

वर्ष : 2019

अंक : 38वाँ

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हरियाणा, चण्डीगढ़

नवकिरण के 37वें अंक का विमोचन



आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण 2019





संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्ता हो रही है कि प्रधान महालेखाकर (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा, हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 38 वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक विभिन्नता में एकता का प्रतीक है। हिंदी विभिन्न भाषा - भाषियों तथा संस्कृतियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है। राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा की धनी है और विचारों व भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम भी है। यह भारत के जन - जन के मन में बसी भाषा है। अतः हमारा संवैधानिक दायित्व और नैतिक कर्तव्य भी है कि हम हिंदी को अपने अधिकाधिक विभागीय कार्यों की भाषा बनाएं। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी।

पत्रिका के सम्पादक मण्डल, रचनाकारों, तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों - कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

गिरीश कुमार (वी.एस.एम.)
भारत के महा सर्वेक्षक, देहरादून (उत्तराखण्ड)



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 38 वें अंक का शीघ्र प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं अन्य सदस्यों को बधाई देती हूँ।

हिंदी हमारी राजभाषा है इस नाते सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग हमारा संवैधानिक तथा नैतिक कर्तव्य है। इसी कर्तव्य को निभाने के लिए विभिन्न कार्यालयों द्वारा अपनी पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसके माध्यम से हिंदी को लोकप्रिय बनाने के साथ-साथ कार्यालय के सदस्यों की रचनात्मक प्रतिभा को एक प्लेटफार्म प्रदान किया जाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति में पत्रिका 'नवकिरण' पहले भी सफल रही है एवं भविष्य में इसके सफल प्रकाशन की मैं कामना करती हूँ तथा पत्रिका के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं प्रदान करती हूँ।

नमिता सेखों

नमिता सेखों

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, चण्डीगढ़



संदेश

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा से मुद्रित होने वाली पत्रिका 'नवकिरण' का इतिहास अनुपम रहा है। आगामी 38वां अंक भी हिंदी की सेवा में नूतन व उत्साही कदम सिद्ध हो, यही कामना है।

हिंदी की पत्रिका में कार्यालय के सभी कर्मचारी अपने विचारों की अभिव्यक्ति करें और अपनी मुखर रचना से भाषायी समृद्धि में चार-चांद लगाएँ। 'नवकिरण' अपनी किरणों से संघ व कई राज्यों की राजभाषा को प्रकाशित करती रहे। इसी कामना के साथ, आगामी अंक की सफलता सिद्ध हो, ऐसी मेरी शुभकामनाएँ हैं।

पूनम पाण्डेय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा की हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 38वें अंक का प्रकाशन हो रहा है। इस अवसर पर मैं पूरे पत्रिका परिवार को बधाई देता हूँ। कार्यालयीन पत्रिका कर्मचारियों की सृजनशीलता का माध्यम होने के साथ-साथ राजभाषा के प्रति गौरव का भाव भी भरती है। अभिव्यक्ति का माध्यम बनने पर राजभाषा हिंदी केवल कार्यालय तक सीमित नहीं रहती बल्कि जनमानस की अपनी हो जाती है। मुझे विश्वास है कि 'नवकिरण' का यह अंक भी राजभाषा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य को पूरा करने में सफल होगा। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु अनंत शुभकामनाएं।

आपका सदाशयी

अजायब सिंह

महानिदेशक ले.प. केन्द्रीय, चण्डीगढ़



संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि आपके कार्यालय की पत्रिका 'नवकिरण' के 38वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।।

'नवकिरण' पत्रिका का निरंतर प्रकाशन स्वयं में ही इसकी सफलता को परिलक्षित करता है। आज विभिन्न माध्यमों द्वारा हिंदी भाषा को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है, 'नवकिरण' भी अपने नाम को सार्थक करते हुए इस दिशा में ज्ञान रूपी प्रकाश फैला रही है। रचनाकारों की मातृभाषा के प्रति प्रेम व साहित्य के प्रति विशेष अनुराग का परिणाम है कि 'नवकिरण' सफलता के इस आयाम पर है। पत्रिका के प्रकाशन में सहभागी सभी अधिकारी, कर्मचारी, लेखकवृंद एवं संपादक मंडल प्रशंसा के पात्र हैं।

पत्रिका की प्रगति एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

(समरकांत ठाकुर)

प्रधान महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएँ, चण्डीगढ़



संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय द्वारा हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' का 38वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों और सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

विभागीय पत्रिकाओं ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभागीय पत्रिकाओं के द्वारा सभी सहधर्मी कार्यालयों को एक-दूसरे कार्यालयों की गतिविधियों से परिचित होने का अवसर मिलता है। राजभाषा हिंदी की दशा और दिशा तय करने में और कार्यालय के रचनाकारों में रचनात्मकता को उभारने के लिए विभागीय पत्रिकाओं से अच्छा साधन नहीं हो सकता।

आशा है कि पत्रिका 'नवकिरण' अपनी रचनात्मकता को इसी प्रकार सार्थक करती रहेगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति और स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

फैसल

(फैसल इमाम)

महालेखाकार (ले.व.ह.)
पंजाब व यू. टी., चण्डीगढ़



संदेश

कार्यालय की हिन्दी पत्रिका “नवकिरण” के 38वाँ अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालयीन कार्मिकों एवं उनके परिवारजनों में रचनात्मकता बढ़ाने व राजभाषा हिन्दी के प्रति अनुकूल वातावरण बनाने में पत्रिका ने बहुमूल्य योगदान प्रदान किया है।

राजभाषा हिन्दी में कार्य करना हमारा नैतिक कर्त्तव्य ही नहीं बल्कि संवैधानिक दायित्व भी है। राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने में कार्यालयीन हिन्दी पत्रिकाएँ निरंतर महत्वपूर्ण योगदान देती रही हैं। सभी को अपने कार्य-व्यवहार में राजभाषा हिन्दी के आम जीवन में प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर बल देना चाहिए, ताकि सामान्य नागरिकों तक सरकारी नीतियों/कार्यक्रमों की जानकारी पहुँच सके।

हिन्दी पत्रिका ‘नवकिरण’ के 38वें अंक के प्रकाशन में योगदान देने हेतु मैं सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल का धन्यवाद करता हूँ व आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक भी पूर्व अंकों की भाँति सभी को पसंद आएगा और भविष्य में भी आप लोग अपनी रचनाओं से इसे समृद्ध करते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित ।

विशाल बंसल

(विशाल बंसल)

प्रधान महालेखाकार, (लेखा एवं हकदारी)

हरियाणा, चण्डीगढ़

प्रतिक्रियाएं

अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका “नवकिरण” के 37 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। कुमार शर्मा अनिल की रचना “नदी एक परंपरा”, माधव कौशिक की कविता “एकाकीपन”, मनजीत शर्मा की रचना “दूसरी औरत”, चाँद सिंह दहिया की कविता “तार तार रिश्ते”, तथा नीतू सिंह की रचना “सुभाषिनी” विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। सार्थक सामाग्री के चयन हेतु बधाई। रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल सम्पादन के लिए सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
महालेखाकार(आ रा क्षे ले प) का कार्यालय, केरल,
तिरुवनंतपुरम।

आपके कार्यालय की पत्रिका “नवकिरण” का 37वां अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आंतरिक एवं बाह्य सौंदर्य तथा मुद्रण आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कहानियाँ, कविताएं ज्ञानवर्धक एवं हृदयस्पर्शी हैं। विशेष रूप से कुमार शर्मा ‘अनिल’ का लेख “नदी एक परंपरा”, नीतू सिंह का लेख “सुभाषिनी” तथा गौरी का लेख “क्या खिताब दें” सराहनीय हैं। पत्रिका के उत्तम संयोजन, सम्पादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वी के शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी(हिन्दी प्रकोष्ठ)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), उत्तराखण्ड का कार्यालय,
कौलागढ़, देहरादून।

आपकी गृहपत्रिका नवकिरण का 37वां अंक साभार प्राप्त हुआ। पत्रिका प्रेषित करने हेतु धन्यवाद। उक्त पत्रिका का मुख पृष्ठ व साज-सज्जा अतीव आकर्षक है। यह क्षेत्रीय विशेषताओं को अभिव्यक्त करने वाला है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख व कविताएं ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण व संग्रहणीय हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई स्वीकार करें और आशा करते हैं कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार व हिन्दी को बढ़ावा देने में अपना योगदान अवश्य ही प्रदान करेगी तथा अन्य कार्यालयों को हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन के लिए प्रेरित करेगी।

खुशींद
लेखा अधिकारी (हिन्दी प्रकोष्ठ)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) जम्मू व कश्मीर का कार्यालय,
श्रीनगर।

पत्रिका में सभी लेख, कविताएं, प्रेरक प्रसंग आदि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाएँ उत्तम स्तर की हैं। इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर दिया गया चण्डीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र का चित्र उसकी मनोहारी छवि प्रस्तुत करता है। कार्यालयी चित्रों से ज्ञात होता है कि कार्यालय में समय-समय पर आयोजित किए जाने वाले अन्य कार्यक्रम जैसे रक्तदान शिविर, योगा दिवस, अग्निशमन से संबन्धित जानकारी कार्यक्रम का सफलतापूर्ण आयोजन किया गया। आपका यह कार्य सराहनीय है। इससे स्पष्ट होता है कि कार्यालय न केवल अपने कार्यालय के कार्यों को पूर्ण करने के प्रति अपनी अहम भूमिका निभा रहा है बल्कि इसके साथ-साथ कार्यालय अन्य सामाजिक कार्यों का भी समय-समय पर सफलतापूर्वक आयोजन कर रहा है। भविष्य में, पत्रिका के रंगीन पृष्ठों एवं चित्रों के साथ और भी निखर कर आने की संभावनाएं व्याप्त हैं।

रवि ठाकुर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्र०/हिन्दी)
कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा) जम्मू व कश्मीर,
जम्मू।

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिन्दी पत्रिका “नवकिरण” के 37वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। ‘बादल’, ‘राहगीरो’, ‘पच्चीस दोहे’, ‘तार-तार रिश्ते’, ‘दूसरी औरत’ आदि रचनाएं रुचिकर एवं सराहनीय ही नहीं बल्कि संग्रहणीय भी हैं। अन्य सभी रचनाएं भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

उदय प्रताप सिंह
हिन्दी अधिकारी/हिन्दी कक्ष
महालेखाकार(लेखा एवं हक) का कार्यालय,कर्नाटक,
बेंगलूर।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद व प्रेरणादायक हैं। विशेषकर ‘इस साइबर मशीनी दुनिया में’, ‘नदी एक परंपरा’, ‘दूसरी औरत’, ‘कालू-एक व्यथा’, ‘राजभाषा हिन्दी का प्रगामी प्रयोग’, ‘रिसेप्शन पार्टी’, ‘पच्चीस दोहे’ और ‘आखिर क्यों?’ रचनाएं सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ-साथ उनकी साज-सज्जा, कागज़, मुद्रण और अंतर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम हैं। पत्रिका के सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

संजय राजदान
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून।

हिन्दी पत्रिका “नवकिरण” के 37वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट संपादक श्री कुमार शर्मा अनिल की कहानी “नदी एक परंपरा” एक उच्च कोटि की रचना है, साथ ही श्री राजेश पंकज की कहानी “रिसेप्शन पार्टी”, श्री कुलदीप कुमार मेहता की कविता “पुलकित मन” एवं अन्य सभी लेख एवं कविताएं अत्यंत ही रोचक व सराहनीय हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी(हिन्दी)
महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय का कार्यालय,
मध्य प्रदेश, ग्वालियर।

आपके कार्यालय की पत्रिका “नवकिरण” के 37वें संस्करण की प्रति प्राप्त हुई है जिसके लिये आपको धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं प्रभावशाली एवं रोचक हैं। डा० सुभाष रस्तोगी की कविता ‘एक दिन लड़की को’, श्रीमती मंजीत शर्मा का लेख ‘दूसरी औरत’ एवं रविन्द्र सिंह की कविता ‘वजूद’ सराहनीय हैं। पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मंडल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

एम नागराजू
सहायक लेखाधिकारी,प्रशासन अनुभाग - ॥
महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हक),
आन्ध्र प्रदेश, हैदराबाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी, आदमी और जानवर, तार-तार रिश्ते, जीवन उल्लास से जीएं एवं राजभाषा हिन्दी का प्रगामी प्रयोग आदि रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी/संपादक वातायन
कार्यालय महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी),
ओड़िशा, भुवनेश्वर।

पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर छायांकित छायाचित्र एवं अन्य विभिन्न कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छे लगे। संकलित सभी लेख एवं रचनाएं सरस एवं पठनीय हैं। श्री कुमार शर्मा 'अनिल' की कहानी 'नदी एक परंपरा', श्री रविन्द्र सिंह की कविता 'वजूद', श्री राजेश 'पंकज' का लेख 'रिसेप्शन पार्टी', श्री कुलदीप कुमार मेहता की कविता 'पुलकित मन', सुश्री नीतू सिंह का लेख 'सुभाषिणी' तथा श्री जोगिन्दर सिंह का लेख 'कर्ज वाली लक्ष्मी' आदि काफी रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मण्डल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं।

लेखाधिकारी/हिन्दी,
कार्यालय महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी) - प्रथम,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा आकर्षक है। कार्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी व विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती पत्रिका ज्ञानवर्धक व रोचक है। पत्रिका में समाहित सभी सामग्री सूचनाप्रद व उपयोगी है। विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों के समावेश से पत्रिका की शोभा में वृद्धि हुई है। आशा है कि यह पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करेगी और अभिव्यक्ति का सार्थक मंच उपलब्ध करवाती रहेगी।

संगीता वशिष्ठ
सहायक निदेशक(रा भा) एवं सचिव,
नराकास चण्डीगढ़।

पत्रिका की संपूर्ण सामग्री प्रशंसनीय है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी आकर्षक है। पत्रिका में समाहित प्रत्येक रचना महत्वपूर्ण एवं सार्थकता लिए हुए है। संपादक मण्डल द्वारा किया गया यह प्रयास वास्तव में सराहनीय है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

विनय कुमार गर्ग
सहायक लेखा अधिकारी(हिन्दी कक्ष),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू टी,
चण्डीगढ़।

यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक विनम्र प्रयास है। पत्रिका की रचनाएँ ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण सदेश देती हैं। श्री माधव कौशिक जी की "राहगीरों" एवं "एकाकीपन", श्रीमती मंजीत शर्मा जी की "दूसरी औरत", श्री संजीव कुमार जी की "राष्ट्रभाषा हिन्दी", श्री सुरेन्द्र कुमार जी की "चोरी के फूल" एवं श्री आशीष कुमार जी की लेखनी "कालू एक व्यथा" विशेष रूप से सरहनीय है। पत्रिका के उत्तम सम्पादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सतत प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्रशासन/हिन्दी),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा,
कोलकाता।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" के 37वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा सुंदर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका के कुशल सम्पादन के लिए सोनार बांगला परिवार की ओर से सम्पादन मण्डल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई। पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु ढेर सारी शुभकामनाएँ।

आदत्ता
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(हिन्दी कक्ष),
कार्यालय महालेखाकार(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता।

आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रशंसनीय लेख एवं सुन्दर कविताएँ लिखने का सराहनीय प्रयास किया है। श्री संजीव द्वारा लिखित लेख “राजभाषा हिन्दी”, श्री आलोक शर्मा द्वारा लिखित कविता “आदमी और जानवर”, श्री रवीन्द्र सिंह द्वारा लिखित कविता “वजूद”, श्री कुलदीप कुमार मेहता द्वारा लिखित “पुलकित मन” और श्री विकास रोहिल्ला द्वारा लिखित “पच्चीस दोहे” सराहनीय व प्रशंसनीय हैं। हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका “नवकिरण” के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ एवं रा क्षेत्र प),
गुजरात, अहमदाबाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक है। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक सफल प्रयास है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। वैसे तो सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं पर विशेष रूप से कहानियों में श्री कुमार शर्मा ‘अनिल’ की “नदी एक परंपरा” चित्त को झकझोरने वाली कथा है। मंजीत शर्मा ‘मीरा’ की कहानी “दूसरी औरत” काफी मनोरंजक है। श्री राजेश ‘पंकज’ की “रिसेप्शन पार्टी रोमहर्षक है। श्री आशीष कुमार की कहानी “कालू-एक व्यथा” गोरे रंग के प्रति आकर्षण की कड़वी सच्चाई बयान करती है। लेखों में श्री संजीव कुमार का “राष्ट्रभाषा हिन्दी” बेहद ज्ञानवर्धक है। श्री संदीप भसीन का “जीवन संगीत” एवं श्री राजेन्द्र शर्मा का “जीवन उल्लास से जीएँ” सकारात्मकता से भरपूर है। श्री माधव कौशिक की कविताएं “राहगीरो” एवं “एकाकीपन” तथा श्री विकास रोहिल्ला ‘प्रीत’ की “पच्चीस दोहे” काफी अर्थपूर्ण एवं रोचक हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

चन्दन कुमार
हिन्दी अधिकारी/प्रशा. हिन्दी सेल
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल,
कोलकाता।

हिन्दी पत्रिका नवकिरण के अंक 37 वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही पत्रिका की साज-सज्जा भी बहुत सुंदर है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। श्री कुमार शर्मा ‘अनिल’ द्वारा लिखित लेख “नदी एक परंपरा”, श्री संजीव कुमार द्वारा लिखित लेख “राष्ट्रभाषा हिन्दी”, श्री सुरेन्द्र कुमार लिखित लेख “बादल”, श्री राजेश ‘पंकज’ द्वारा लिखित लेख “रिसेप्शन पार्टी”, श्री कुलदीप कुमार मेहता द्वारा लिखित कविता “पुलकित मन” और श्री विकास रोहिल्ला ‘प्रीत’ द्वारा लिखित कविता “पच्चीस दोहे” सर्वाधिक रोचक एवं शिक्षाप्रद हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत बहुत शुभकामनाएँ।

आलोक सिंह
व.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता।

नवकिरण का 37वां अंक पढ़कर नया अनुभव मिला कि हर विधा की रचनाएँ हैं। संपादकीय, सदेश से लेकर प्रतिक्रियाएँ, कविता, कहानी, लघुकथा, निबंध, लेख, चित्र सब कुछ रचनाशैली की नई पहचान हैं। नए तजुर्बे, नए-दृष्टिकोण, नए धारा, नए विचार एवं नया सम्पादन कला-कौशल प्रभावित करता है। ‘नदी एक परंपरा’ की प्रतीकात्मकता एक नए शैली की कथा है। ‘दूसरी औरत’ में मनजीत शर्मा संवाद यात्रा के साथ माँ के प्रति संवेदनाग्रस्त हो जाती है। तब ऐसे लगता है जैसे मात्र उनकी ही नहीं, हम सबकी माँ के प्रति संवेदना है जो पाल-पोस कर बड़ा करती है। वह ‘माँ है वो मेरी.....’। यह कहानी हृदय को छू जाती है। ‘ऐ बापू’, ‘आदमी और जानवर’, प्रार्थना, पुलकित मन, दोहे जैसी अनुभव प्रधान कविताओं के साथ लघुकथाएँ चोरी के फूल, कर्ज वाली लड़की काफी कुछ हैं।

सूर्यदीन यादव
संपादक साहित्य-परिवार,
नाड़ियाद, जिला खेड़ा (गुजरात)।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विवरण	लेखक	पृ० सं०
1.	संपादकीय	कुमार शर्मा 'अनिल'	16
2.	अब गधे बोलेंगे	सुभाष शर्मा	17
3.	आपका लड़का	सुरेन्द्र कुमार	20
4.	सब यहीं रह जाएगा	' '	20
5.	खूबसूरत	कुमार शर्मा 'अनिल'	21
6.	फिक्र यहाँ सबको है।	रविन्द्र सिंह	23
7.	अभिनंदन	दरवेश राही	23
8.	दोस्ती	संदीप कुमार	24
9.	मोबाईल युग	नरेन्द्र बड़गुजर	24
10.	ऊँ शांति	संदीप कुमार भसीन	24
11.	गज़लें	मनजीत शर्मा 'मीरा'	25
12.	प्रार्थना	राजकुमारी	26
13.	माँ	राहुल रहेजा	26
14.	दहलीज	नीतू सिंह	26
15.	वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप	उम्मेद सिंह बीका	27
16.	जंगी सिपाही	सुभाष भास्कर, अनुवाद राजेश पंकज	28
17.	'सपने और काँच	आलोक शर्मा	30
18.	नैतिक मूल्यों का पतन	राजेश पंकज	31
19.	जूनियर	आशीष कुमार	32
20.	चित भी अपनी और पट भी	पंकज शर्मा	33
21.	जल है तो कल है	विनय कुमार गर्ग	34
22.	हिन्दी दिवस	संजीव कुमार शर्मा	35
23.	मेरी बेटी	नीलम बरार	35
24.	हम नहीं हैं पतंगे	डॉ. सुभाष रस्तोगी	36
25.	ये आदमी	बाल बिहारी प्रजापति	37
26.	हम हमेशा दोस्त रहेंगे	चाँद सिंह दहिया	37

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विवरण	लेखक	पृ० सं०
27.	दो गज़लें	अरमजीत 'अमर'	37
28.	हंसगुल्ले	राजेन्द्र कुमार शर्मा	38
29.	डायबिटीज (मधुमेह)	नरेन्द्र कुमार	39
30.	बंटवारा	राजकुमार	42
31.	राजभाषा हिन्दी	अंकित कुमार ठाकुर	43
32.	गज़ल (ज़्ज़्बात)	प्रमोद कुमार गुप्ता	43
33.	इन्डिकेटर	के.के. नंदा	44
34.	प्यार भी तुमसे	कुलदीप कुमार मेहता	44
35.	राजभाषा हिन्दी का प्रगामी प्रयोग से संबंधित रिपोर्ट	अवनीश कुमार	49
36.	खेल कूद एवं साँस्कृतिक गतिविधियाँ	राजेन्द्र कुमार भसीन	50
37.	हिंदी शब्दों के अंग्रेजी पर्याय	संजीव कुमार	54
38.	सेवानिवृत्त	रंजीव कुमार सिंह	55
39.	श्रृद्धाजंली	रंजीव कुमार सिंह	56

सूचना

नवकिरण का आगामी अंक शीघ्र प्रकाशित किया जाना है। रचनाकार अपनी रचनाएं जैसे लेख, संस्मरण, विभागीय लेख, कहानी, कविता, गीत गजल इत्यादि हिन्दी कक्ष को भिजवा दें। रचनाएं पृष्ठ के एक तरफ टाईप की हुई अथवा हस्तलिखित मौलिकता प्रमाण पत्र सहित भेजें। डिजिटल रचनाओं का स्वागत किया जायेगा।



“नवकिरण” का 38वाँ अंक अपने नये कलेवर और साज सज्जा के साथ आपके हाथों में है। वर्ष 1986 से प्रारम्भ हुआ ये सफर नये आयामों, रचनाकारों को अपने साथ मिलाकर लगातार जारी है। शुरुआत बहुत मुश्किल थी और लक्ष्य था साहित्य के माध्यम से विभागीय कार्यकलापों, सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी को उसका उचित और गौरवपूर्ण स्थान दिलाना। यह उद्देश्य लगभग पूरा हो चुका है और हम निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर अपना विभागीय कार्य कर रहे हैं। इस कार्यकाल में अब हिन्दी में कार्य करने वाले को दायम श्रेणी में नहीं रखा जाता।

विभागीय पत्रिकाओं का उद्देश्य सरकारी कामकाज में हिन्दी को प्रोत्साहित करने के अतिरिक्त विभागीय प्रतिभाओं को लेखन का मंच प्रदान करने के साथ - साथ अन्य गतिविधियों की जानकारी प्रदान करना भी होता है नवकिरण अपने इस उद्देश्य में पूर्णतः सफल रही है। बहुत से नये रचनाकारों को पत्रिका में स्थान मिला है और वे हिन्दी में रचनाएं लिख रहे हैं। सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को लेकर कई बार राजभाषा समिति ने कार्यालय की सराहना की है।

किसी कार्यालय में किसी विचार को मूर्तरूप देने में उस कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों का बहुत योगदान होता है। मुझे ये लिखते हुए प्रसन्नता होती है कि हमारे प्रधान महालेखाकार महोदय और उपमहालेखाकार महोदय ने हमेशा हिन्दी में कार्य करने के लिए कर्मिकों को प्रोत्साहित ही नहीं किया, वरन् हिन्दी की फाइलों पर अपनी टिप्पणियाँ भी हिन्दी भाषा में ही लिखी।

अंत में मैं नवकिरण परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को पत्रिका के नये अंक के प्रकाशन की बधाई देता हूँ
आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत है।

**भारत माता के माथे की बिंदी
हमारी राजभाषा हिंदी**

अब गधे बोलेंगे

सुभाष शर्मा



जनाब, अब गधे बोलेंगे और आदमी सुनेंगे।

श्रीमान जी, हैरान मत होइए। विज्ञान ने बहुत उन्नति कर ली है। बहुत ज्यादा। वैज्ञानिकों ने चाँद और मंगल आदि ग्रहों पर जा कर केवल उनका अध्ययन ही नहीं किया, उन्होंने चाँद के सौंदर्य एवं मंगल ग्रह की धार्मिक आस्था को केवल धक्का ही नहीं लगाया बल्कि बड़े-बड़े चमत्कार भी किए हैं। इनसे मानव का जीवन सुविधापूर्ण हुआ है। संचार, यातायात के साधनों तथा स्वास्थ्य के संबंध में अनेकों चमत्कार किए हैं।

जनाब, जिस चीज के फायदे होते हैं उसके नुकसान भी होते हैं।

सरकार, यहीं बस नहीं होती। वैज्ञानिकों ने तो वह चमत्कार कर दिखाया है कि पूछिए मत। अब तो एक वैज्ञानिक ने एक ऐसे यंत्र का आविष्कार किया है कि यदि उसे किसी गधे के सिर पर लगा दिया जाए तो वह उसके हाव-भावों को समझ कर उसके रेंकने की आवाज को मानवीय-भाषा में बदल सकता है, है न कमाल की बात?

जनाब, यदि उस वैज्ञानिक कि खोज सफल रही तो फिर गधे बोलेंगे और आदमी सुनेंगे।

यदि किसी पुराने विचारों वाले बुजुर्ग से यह बात सांझा करोगे तो वह कहेगा कि कलयुग है, घोर कलयुग।यही देखना बाकी रह गया था कि अब गधे बोलेंगे।जिन्हें भगवान ने रेंकने के लिए बनाया था वे आदमियों की तरह बोलेंगे।ये वैज्ञानिक प्रकृति का संतुलन बिगाड़ने पर तुले हुए हैं।

फिर अन्य गुस्सैल बूढ़ा कहेगा....अरे इन वैज्ञानिकों को यह नहीं पता कि कुदरत अपनी पर आ गई तो सब कुछ तहस-नहस कर डालेगी।ये वैज्ञानिक ढूँढे नहीं मिलेंगे।अपने साथ मनुष्यों को भी ले डूबेंगे।

परंतु जनाब, जो भी हो, यह सच होने वाला है कि गधे बोलेंगे और आदमी सुनेंगे।

जनाब, यदि ऐसा हो गया तो बहुत गंभीर समस्या उत्पन्न हो जाएगी। श्रीमान जी, जरा सोचिए। जरा नहीं, खूब सोचिए। जिस जीव को युग-युगांतर से बोलने का अवसर नहीं मिला, जो अब वह बोलने लगा तो भूतकाल की सभी ज्यादतियों का बदला लेगा। उसके बेजुबान होने के कारण मनुष्यों ने उस पर जो अत्याचार किए हैं, वह उनका बदला लेगा। उनका हिसाब चुकता करेगा। इतना ही नहीं, यदि किसी मनुष्य ने उसके सामर्थ्य से अधिक बोझा उस पर लाद दिया तो वह उठाने से इंकार कर देगा। वह भी मानव के समान कार्य के घण्टे निश्चित करने की बात करेगा। आराम के लिए समय माँगेगा। काम के लिए अच्छे वातावरण की माँग करेगा। कह देगा - गधों की तरह बहुत जी लिया। गधों की तरह बहुत काम कर लिया। अब बिल्कुल नहीं। अच्छे भोजन की माँग करेगा। ऐसा नहीं चलेगा कि जब मन हुआ, सामने भूसा फेंक दिया, जब जरूरत हुई काम में लगा दिया।

अच्छे आवास की माँग करेगा। जहां वह आराम से अपनी गधों वाली हरकतें बिना रोक-टोक के, आजादी से कर सके। जब चाहे रेंके, जब चाहे आराम से धरती पर लोटे। अर्थात् अपनी इच्छानुसार गधों वाली आजाद जिंदगी जी सके।

हैरान मत होइए श्रीमान। यह कोई अनोखी माँग नहीं है। जब बाबू - कालोनी, अफसर - कालोनी, वकील - कालोनी.....और पता नहीं कौन-कौन सी कालोनियाँ अलग-अलग हो सकती हैं तो गधा - कालोनी क्यों नहीं हो सकती।

जनाब, अब गधे बोलेंगे और आदमी सुनेंगे।

लेकिन जनाब, गधे तो पहले भी बोलते थे। भले ही उनका शरीर मानव का होता था। अक्सर कहा जाता था - तू तो गधा है.... क्या गधों की तरह चरता रहता है.... फिजूल ही गधों की तरह काम में लगा रहता है....वगैरह - वगैरह। जनाब वे सभी बोलते थे। है न गधों के बोलने वाली बात।

मगर जनाब, यदि अब गधे बोलने लगे तो बहुत मुश्किल पैदा हो जाएगी। आदमी को मुंह संभाल कर और बड़े ध्यान से बोलना पड़ेगा। अक्सर गाली दे देते हैं – ओ गधे के पूत! हो सकता है कोई गधा सुनकर बोल पड़े – अबे आदमी! यदि यह गधे का पूत है तो तेरे पास क्या कर रहा है? यह हमारे कुनबे का सदस्य है। इसे हमारे पास भेज दे। यह हमारे साथ हमारे कामकाज में हाथ बंटाएगा। यह हमारी बिरादरी का है। तू इस पर अत्याचार कैसे कर सकता है? इसे कैसे डांट सकता है?

साहब, यह भी हो सकता है कि गधे बागी सुर अपना लें और कहें – बहुत जुल्म सह लिया हमने आदमी का। अब बिल्कुल नहीं सहेंगे। हिंसा पर उतारू हो जाएँ और दुलत्तियों की वर्षा कर दें।

जनाब जो गधे लोकतांत्रिक देशों में रहते हैं, संभवतः कह उठें – देश के संविधान के अनुसार मनुष्यों के समान हमें भी मौलिक अधिकार दो – पढ़ने का, अच्छे ढंग से जीने का, रहने का। अधिकार न मिलने पर संघर्ष का मार्ग अपना लें। सड़कों पर निकाल आएँ। आंदोलन छेड़ दें। कोई गधा नेता बन कर उनकी सेना बना ले। वे कौन सा प्रशासन और पुलिस की दमनकारी नीतियों से डरेगे। आखिर वे गधे हैं। जुल्म सहने के आदी हैं। बल्कि पुलिस इनकी दुलत्तियों से डरेगी। गधे तो आदि काल से डडे खाते आए हैं। लेकिन पुलिस और प्रशासन को दुलत्तियाँ खाने का अभ्यास नहीं है। चाहे प्रांत की पुलिस हो या केंद्रीय सुरक्षा बल, इन्हें खदेड़ने में सफल नहीं होंगे। आखिर ये गधे हैं। किसी की नहीं सुनेंगे।

जनाब, जब ये संघर्ष के लिए सड़कों पर उतरेंगे तो सब कुछ जाम कर देंगे – बसें, रेलगाड़ियाँ, ट्रक..... यातायात के सभी साधन ठप्प कर देंगे। कानून एवं व्यवस्था की गंभीर समस्या पैदा कर देंगे। अजी साहब, हमारे देश में तो मटुठी भर लोग एक छुटभैये नेता के नेतृत्व में धरना लगा कर सब कुछ ठप्प कर देते हैं और सरकार लाचार सी मूक दर्शक बन जाती है कि कड़ाई करने से कहीं वोट न छिन जायें। घुटने टेक देती है। ये तो सब मिल कर देश – व्यापी आंदोलन कर सकते हैं। इनमें एकता बहुत होती है। एक गधा रेंकता है तो बाकी सब उसके सुर में सुर मिला कर रेंकने लगते हैं। फिर किस सरकार में दम है कि इनके आंदोलन के सामने टिक सके।

जनाब, हो सकता है कि प्रशासन को इनके सामने झुकना पड़ जाए। हो सकता है कि कुछ राजनैतिक दल इन्हें अपना वोट – बैंक समझ कर तथा कुछ तथाकथित मानव अधिकारों की पैरवी करने वाली संस्थाएं इनके समर्थन में आ जाएँ। राजनैतिक दबाव के चलते, प्रशासन व सत्ताधारी पार्टी को इनकी मांगें माननी पड़ जाएँ और ये अपने अधिकार प्राप्त कर लें। और यहाँ कौन सा वोट एवं मौलिक अधिकारों के लिए कोई योग्यता अथवा मापदंड हैं। बस जिंदा होना जरूरी है। वैसे भी योग्यता के मामले में गधों और मनुष्यों में ज्यादा अंतर नहीं है।

जनाब, सम्मान पूर्वक जीने का अधिकार तो प्रत्येक मनुष्य को है और बाकी सब को भी। फिर गधों को क्यों नहीं?

जनाब, संभव है कि अपने अधिकार प्राप्त करके, अपने साथ हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज बुलंद करें और कहें कि अत्याचारों के विरुद्ध हम बोलते तो पहले भी थे परंतु मनुष्य हमारी भाषा नहीं समझता था। यदि समझ भी जाता तो अपने स्वार्थ के लिए, समझ न पाने का बहाना बना लेता था। अब यह बहाना न चलेगा। हो सकता है वे अपने उज्ज्वल भविष्य की मांग रख दें।

जनाब, गधे होते तो बहुत मेहनती हैं। सिर झुका कर काम में जुट जाते हैं। गधों कि तरह मेहनत करने के विषय में गधों से बेहतर कौन जान सकता है। यदि भविष्य में इन्हें पढ़ने लिखने के मौलिक अधिकार मिल जाएँ तो ये मेहनती स्वभाव के होने के कारण कामयाब भी हो सकते हैं। यह भी संभव है कि ये मनुष्यों से भी आगे निकाल जाएँ। क्योंकि आज का मनुष्य बहुत आलसी है। कामचोर है। निकम्मा है। अगर ये पढ़ – लिख गए तो ये मनुष्य के बराबर हो सकते हैं। नौकरियों में चयनित हो सकते हैं। यदि कोई गधा पढ़ – लिख कर मनुष्यों के ऊपर अधिकारी लग गया तो फिर कल्पना कीजिए कि कैसी स्थिति होगी। गधा अफसर और मनुष्य मातहत। गधा कुर्सी पर बैठेगा कैसे? पूछ कहाँ रखेगा? खुर कहाँ रखेगा? सबसे बड़ी कठिनाई बाथरूम की होगी। जनाब, मातहत क्या कहेंगे? वैसे यह जुमला अफसरों के लिए अक्सर मातहतों द्वारा बोला जाता है।

जनाब, उसके चपरासी के लिए तो धर्म – संकट पैदा हो जाएगा। सुबह आते ही गधे को सलाम करना पड़ेगा। आखिर वह बॉस है। भले ही गधा है। उसके खाने – पीने का प्रबंध करना पड़ेगा। यह आदमी तो है नहीं कि चाय – कॉफी और बिस्कुट से काम चल जाए। लेकिन साहब तो गधा है। साहब, अब खुद ही सोच लीजिए कि उसके लिए कितनी बड़ी समस्या उत्पन्न हो जाएगी।

फसेंगे तो बाकी मातहत भी। उन्हें भी सुबह आकर बॉस को दुआ – सलाम करनी होगी।

साहब, सोचिए यदि कोई गधा अफसर हो गया तो उसे घूस में क्या दिया जाएगा? पैसे तो वो लेगा नहीं। लेकर क्या करेगा? तो फिर उसके लिए घास और चारा दिया जाया करेगा। मातहत भी दिवाली – वैशाखी पर मिठाइयों या उपहारों कि बजाए इस प्रकार की वस्तुएँ, हरी घास का गठुर या चारे की बोरी लेकर जाएंगे। यदि किसी ने ज्यादा चमचागीरी करनी हो तो हरी – हरी घास लेकर जाएगा और कहेगा – साहब, यह ताजा घास है, बिल्कुल लहलहाती घास। स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी है। यदि चावलों के बुरादे वाला चारा ले कर जाएगा तो कहेगा – इसमें चावलों का बुरादा भी है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयोगी है।

साहब, यह भी संभव है कि घूसखोरी पर कुछ हद तक अंकुश लग जाए। परंतु बहुत ही विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। मातहत तो भूखे मर जाएंगे। ऊपर वालों का क्या बनेगा? क्योंकि यदि गधा – साहब रिश्वत में धन नहीं लेगा तो बाकियों के पास दर्जा – ब – दर्जा हिस्सा कैसे जाएगा? क्या घास और चारा हिस्से में जाएगा? रिश्वत नहीं मिलेगी तो कैसे चलेगा? काम कैसे होंगे? फिर तो राष्ट्रीय आपदा की स्थिति पैदा हो जाएगी।

साहब, जब गधे बोलेंगे और आदमी सुनेंगे तो बहुत गड़बड़ हो जाएगी। सब कुछ कल्पनातीत होता प्रतीत होता है। बड़ी कसूती स्थिति पैदा हो जाएगी। भगवान भला करें।

सरकार, बाकी देशों की छोड़ो। हम अपने देश की बात करें। हमारे देश में तो लोकतन्त्र है। वोट का राज है। कल यदि कोई गधा राजनीति में आ कर घाघ नेता बन गया और वोटों की तिकड़म लगा कर सरकार का मुखिया बन गया तो क्या होगा? मनुष्यों के लिए तो बहुत ही अपमान की बात होगी।

साहब, यह तो बहुत चिंता का विषय है। बहुत ही गंभीर समस्या है। क्या यह लोकतान्त्रिक प्रणाली की खामी है?... नहीं। क्या देश में नेताओं की कमी है?... नहीं। क्या हमारे देश में अधिकतर लोगों को गधे – नेता और मनुष्य – नेता में ज्यादा अंतर नजर नहीं आता?... कह नहीं सकते।...तो फिर? जनाब, यह लोकतान्त्रिक प्रणाली में लोगों के वर्गीकरण, जातिवाद, क्षेत्रवाद, धर्मवाद आदि द्वारा वोटों के गणित का कमाल है। जो कर गया सो कर गया। और साहब, यदि यह कमाल कोई गधा कर गया तो? फिर क्या? वह गधा देश का प्रमुख होगा। देश पर गधों का राज हो जाएगा।

जनाब, यह देश और देशवासियों के लिए बहुत ही लज्जा की बात होगी। अंतराष्ट्रीय स्तर पर बहुत बदनामी होगी कि इस देश के मनुष्यों से तो गधे ज्यादा समझदार हैं। मनुष्यों पर शासन कर रहे हैं। मनुष्यों के लिए तो डूब मरने वाली बात होगी।

साहब, फिर क्या बनेगा दुनिया का?

जनाब, क्या बताएं? परमात्मा ही जाने।

श्रीमान जी! वह क्यों जाने? गलतियाँ करो तुम और जाने वह....क्यों?... जनाब हो सकता है परमात्मा कह दे – मैं तुम्हारे बारे में सोच – सोच कर थक गया हूँ। ऊब गया हूँ। तुम्हारी गलतियों से पक गया हूँ। और अब पलायन कर गया हूँ। मैंने तो मनुष्य को सब से बढ़िया और सबसे उच्च बनाया था। यदि तुम गधे से नीचे चले गए तो मैं क्या करूँ? और यदि मेरी इच्छा के विरुद्ध तुमने गधे को बोलना सिखाया है तो फिर भुगतो..... ।

साहब, यदि गधे बोलेंगे तो यही सब होगा। प्रार्थना करो कि उस वैज्ञानिक की खोज, केवल खोज ही रह जाए। यथार्थ न बने। असफलता उसके कदम चूमे। इसी में ही सब का कल्याण है, जनाब।

– इति –



आपका लड़का

(लघु कथाएं)

सुरेन्द्र कुमार

वैसे तो गृह मंत्री जी का यह समय सुरा एवं सुंदरी का होता है एवं इसमें किसी भी प्रकार का विघ्न वह सहन नहीं कर पाते। इस पर भी किसी विषम परिस्थिति से उनको अवगत कराना अवश्य हो जाता। आज भी ऐसी ही परिस्थिति उत्पन्न हो गई थी। कुछ समय पहले शहर की मुख्य सड़क पर दो तीन युवकों ने एक युवती का अपहरण कर लिया था। उसके पश्चात उसके साथ बलात्कार करके उसे शहर के उजड़े हुए स्थान पर छोड़ दिया था।

उधर से मोटर साईकल पर जाते हुए एक पत्रकार ने यह घटना देख ली थी एवं तुरन्त पुलिस को सूचना दे दी थी। वह कार का नम्बर तो नोट नहीं कर सका था किन्तु उसका माडल एवं रंग उसने बता दिया था। इस पर दो घंटे बीत चुके थे किन्तु पुलिस ने किसी को गिरफ्तार नहीं किया था। कुछ पत्रकार कैमरों सहित राज्य के गृह मंत्री के घर आ गए थे।

अंदर से गुस्से से भरे हुए एवं बाहर से कृत्रिम मुस्कराहट बिखेरते हुए मंत्री जी ने उन पत्रकारों से उस समय आने का कारण पूछा। जब उन्हें पूर्ण स्थिति का पता चला तो उन्होंने पुलिस महानिरीक्षक को फोन पर पत्रकारों के सामने पूछा, 'आप आज के बलात्कार करने वालों को अभी तक पकड़ क्यों नहीं सके हैं?',

महानिरीक्षक ने उत्तर दिया, 'सर ! हम उन्हें पकड़ने की बजाए उन्हें शहर से दूर भेजने का प्रबन्ध कर रहे हैं'

'क्यों?' मंत्री जी ने उत्सुकता से पूछा।

'क्योंकि उन तीनों में एक आपका लड़का है।,

मंत्री जी ने धन्यवाद कह कर पत्रकारों का विश्वास दिलाया कि पुलिस पूरी निष्ठा से उन्हें पकड़ने में लगी है एवं वह स्वयं सुनिश्चित करेंगे कि अपराधी शीघ्र पकड़े जाएं।



सब यहीं रह जाएगा

भगवान दास अपने मित्र श्यामसुन्दर की अर्थी को कंधा तो नहीं दे पा रहे थे, किन्तु उसकी याद में अपने आंसू भी नहीं रोक पा रहे थे। श्याम सुन्दर उनके परम मित्र थे। यह बात सभी लोग जानते थे। भगवान दास कह रहे थे इस दुनिया में खाली हाथ आए हैं एवं खाली हाथ जाना है। मैं तो श्याम सुन्दर को बहुत समझाता था कि इस व्यापार के बारे में चिन्ता न करे, बच्चों को जो भी करते हैं करने दिया कर, फिर भी काम की चिन्ता में रहता था। मेरे से दो वर्ष छोटा था किन्तु मुझसे पहले चला गया।

जब उन्होंने श्मशान घाट में प्रवेश किया तभी भगवान दास ने देखा कि उनका लड़का मोटर साईकल पर वहां आ रहा है। भगवान दास की उदास आँखों में गुस्सा भर आया। उनका लड़का जब अपनी मोटर साईकिल को एक ओर रूखी कर उनके समीप पहुंचा तो उन्होंने उससे कहा कि तुम दुकान छोड़कर यहां कैसे आ गए। तुम्हें यहां तक आने एवं वापिस जाने में कितना समय लग जाएगा। इसके अतिरिक्त यहां भी समय लग जाएगा। तुम दुकान को नौकरों के भरोसे छोड़ आए हो। तुम्हें पता नहीं कि नौकर कभी कुछ कमाकर नहीं देते।

सभी, जो उनके आस पास थे भगवान दास के बदले तेवरों को चकित होकर देख रहे थे



खूबसूरत

कुमार शर्मा 'अनिल'



दिन भर धूप बाँटता सूरज जैसे ही अपने घर जाने की तैयारी में धूप की चादर को समेटना शुरू करता, मुहल्ले के बुजुर्ग कालोनी के पार्क में 'ईवनिंग वॉक' करने और गप्पें मारने के लिए घर से निकलने की तैयारी शुरू कर देते। इसमें कुछ बुजुर्ग महिलाएं, बच्चे और कुछ अन्य लोग भी बाद में आकर जुड़ जाते, जिनके पास वक्त होता।

इसी पार्क में इन पाँच बुजुर्गों, जो विभिन्न आर्थिक और सामाजिक परिवेश से आते थे, की 'मंडली' बहुत प्रसिद्ध थी। सरदार हरजीत सिंह और खन्ना साहब जहां प्रसिद्ध सर्जन रह चुके थे और अपने ज़िन्दादिल स्वभाव के लिए जाने जाते थे, वहीं कैप्टन कालिया आर्मी बैंकग्राउंड से थे और अभी भी काफी रसिक थे। कपूर साहब पुलिस अधिकारी रहे थे और बड़े अच्छे गप्पी थे। वहीं शर्मा जी एक जाने माने पत्रकार और लेखक रहे थे। अगर शर्मा जी को छोड़ दें तो बाकी चारों ही अब भी बिगड़ने की हद तक 'रसिक' थे और प्रतिदिन इन पाँचों में चर्चा की शुरुआत किसी राजनैतिक या सामाजिक बहस से होती परन्तु जल्दी ही फिल्म और औरतों की ओर मुड़ जाती। शर्मा जी की बी.पी. और शुगर की बीमारी को यदि छोड़ दें तो बाकी चारों अपनी साठ-पैंसठ की आयु में भी काफी स्वस्थ और जवान नजर आते थे। पाँचों अच्छी बौद्धिक, सामाजिक और सम्मानजनक पृष्ठभूमि से थे और सभी का आर्थिक रूप से समृद्ध भरा-पूरा परिवार था। इनकी मित्रता का एक कारण 'डिवाइन लाइफ सोसायटी' भी थी जिसके वे सदस्य थे। पाँचों में गहरी मित्रता और प्रेम था और यह स्थापित सत्य उनकी मित्रता का आधार था कि वे आपस में न कभी झूठ बोलते थे न कोई बात एक दूसरे से छुपाते थे।

शर्त और एक दूसरे को चैलेंज देना उनकी आदतों में शामिल था और जो हारता था वह बड़े ही हंसमुख अंदाज में अपनी हार स्वीकार करता—एक जोरदार ठहाका लगाते हुए। सभी कैप्टन कालिया के इस जुमले से सहमत थे कि—“जीत में बहुत आनन्द आता है पर हार भी कोई बुरी चीज नहीं है।” वह भी भविष्य में होने वाली 'जीतों' के आनन्द को बढ़ा देती है। वो कैप्टन कालिया ही थे जो हर रोज ही 'शर्त' और 'चैलेंज' के लिए कोई बात तलाश ही लेते। ये शर्तें बड़ी छोटी-छोटी चीजों, किसी खबर, घटना, मुकदमे या मैच के परिणामों को लेकर लगती थीं और इसी प्रकार जो 'चैलेंज' दिये जाते थे वे भी एक दूसरे की बौद्धिक, शारीरिक क्षमता और सामाजिक सम्मान को देखकर दिये जाते थे। अभी पिछले हफ्ते ही पार्क में वॉक पर आने वाली एक सुंदर महिला से मित्रता की शर्त में कैप्टन कालिया कपूर साहब से हारे थे और एक जोरदार ठहाके से उन्होंने इस हार को स्वीकार करते हुए कहा था—“मेरी किस्मत में शायद इससे भी सुंदर महिला की मित्रता लिखी है।”

पिछले पूरे हफ्ते से पाँचों के बीच इसी मित्रता को लेकर हँसी-मजाक चल रहा था और पूरा हफ्ता बीत जाने पर भी कपूर साहब की मित्रता पूरे दिन में मोबाइल पर एक-दो एस.एम.एस. से आगे नहीं बढ़ पाई थी।

“चलो, छोड़ो! एक नई शर्त लगाते हैं—”कैप्टन कालिया जल्दी ही हारे हुए का तमगा अपने ऊपर से हटाने को उत्सुक थे—“देखो भई, हम सभी ने इससे पहले भी कई बार अपने जीवन में आई कई सुंदर महिलाओं और उनके प्रेम की चर्चा की है। सभी को अपनी प्रेमिकाएं या पत्नियाँ सुंदर लगती हैं। शर्त ये रही कि जिसके जीवन में 'सर्वाधिक सुंदर' महिला आई होगी, वही शर्त जीतेगा। मुश्किल जरूर है परन्तु उसका फोटोग्राफ और नाम-पता दिखाना पहली शर्त है। झूठ हममें से कोई नहीं बोलता इसका विश्वास सभी को एक दूसरे पर है इसलिए यह भी जरूरी है कि वह महिला भी हमसे प्यार करती हो यानि यह इकतरफा प्रेम नहीं हो। ...और जब यह इकतरफा प्रेम नहीं है तो या तो उसका फोटोग्राफ उपलब्ध होगा या उसे उपलब्ध कराना होगा। इसमें उम्र का कोई बंधन नहीं है कि वह फोटोग्राफ किस उम्र में खींचा गया है।

कपूर साहब और खन्ना साहब की पत्नियाँ अब भी बहुत ही सुंदर दिखती थीं, और उन्हें विश्वास था कि यदि उनके युवावस्था के फोटोग्राफ वे प्रस्तुत करेंगे तो अवश्य जीतेंगे। अतः उन्होंने तत्काल शर्त मान ली। सरदार हरजीत सिंह ने अपनी पहली पत्नी की मृत्यु के पश्चात अपने से बीस वर्ष छोटी एक सुंदर लड़की से विवाह किया था अतः वे भी आश्चर्य थे कि जीत उन्हीं की होगी। कैप्टन कालिया ने तो शर्त लगाई ही अपनी जीत के लिए थी। उनका तीस वर्ष पुराना प्रेम संबंध अब भी एक मित्रता के रूप में कायम था। हर बार की तरह शर्मा जी को यह शर्त भी न चाहते हुए

माननी ही थी। वे बेहद साधारण रंग रूप के व्यक्ति थे और उनका पूरा जीवन संघर्ष करते बीता था। पत्नी बेशक साधारण रंग रूप वाली ही थी परन्तु उन्होंने पूरे जीवन अपनी पत्नी से ही प्रेम किया था। शर्त से अलग हटने का प्रश्न ही नहीं था। दूसरे सुंदर होने के साथ-साथ यह भी शर्त थी कि वह महिला आपसे प्यार भी करती हो। अचानक उन्हें याद आया पत्नी ने अपने पहले करवा चौथ पर एक फोटो खिंचवाई थी जिसमें वह काफी सुंदर नजर आ रही थी। उन्होंने सोचा इस सौंदर्य प्रतियोगिता की शर्त में कल वे अपनी पत्नी की यही फोटो ले आयेंगे।

अगले दिन शर्मा जी को छोड़कर चारों मित्र अपनी-अपनी जीत की मुस्कुराहट और विश्वास के साथ सही समय पर पार्क में उपस्थित थे। ठीक उसी समय शर्मा जी घर के सारे सामान को तितर-बितर कर अपनी पत्नी की वह फोटो खोजने में लगे थे। पत्नी भी दोपहर से उन्हें इस काम में सहयोग देते-देते तंग आ चुकी थी और खीजने लगी थी परन्तु फोटो थी कि मिलने का नाम ही नहीं ले रही थी। जब आठ दस बार उनके मित्रों के मोबाइल की रिंग बज कर बंद हो गई तो ग्यारहवीं कॉल के बजते ही अचानक उनके हाथ एक दूसरी फोटोग्राफ लग गई। एक क्षण के लिए वे सोच में डूब गये फिर उन्होंने नियम के अनुसार फोटोग्राफ के पीछे नाम लिखा और तेजी से पार्क की ओर चल दिये। चारों मित्रों ने जो फोटोग्राफ एक दूसरे को दिखाये उनमें चारों ही महिलाएं अत्यंत सुंदर थीं। कपूर साहब जो अपनी पत्नी की ही युवावस्था का फोटोग्राफ लाये थे, को छोड़कर सरदार हरजीत, कैप्टन कालिया और खन्ना साहब ने अपनी प्रेमिकाओं के युवावस्था के फोटोग्राफ प्रस्तुत किये। सुंदरता के अतिरिक्त उन महिलाओं के नाम भी बहुत खूबसूरत थे, —सुगंधा कपूर साहब की पत्नी का नाम था, कनुप्रिया खन्ना साहब की प्रेमिका ओर नैन्सी सरदार हरजीत सिंह की मित्र थी। हर फोटोग्राफ की प्रस्तुति पर सभी मित्र एक दूसरे की महिला मित्रों की सुंदरता की दिल खोलकर तारीफ कर रहे थे और नाम की भी। कैप्टन कालिया जैसे ही अपनी प्रेमिका की फोटो दिखाने लगे कि अचानक खन्ना साहब बोल पड़े—“भई इतने सुंदर-सुंदर नाम हैं, नाम के भी अलग से नम्बर होंगे कुछ। ...और रिश्ते के भी।” कपूर साहब अपनी पत्नी का फोटोग्राफ लाये थे तो रिश्ते की बात आते ही एकदम से समर्थन में आ गये—“हाँ-हाँ सुंदरता के साथ-साथ रिश्ता क्या है इसमें भी कुछ नम्बर होने चाहिए-बेशक थोड़े ही हो।” उन्हें विश्वास था कि पत्नी से ज्यादा एकनिष्ठ और समर्पित प्रेमिका कोई हो ही नहीं सकती।

“दस नम्बर नाम के, दस नम्बर रिश्ते के बाकी सौ में से अस्सी नम्बर सुंदरता के ही होंगे क्योंकि शर्त सुंदरता को लेकर लगी थी”—सरदार हरजीत सिंह ने फैसला सुना दिया। उन्हें लग रहा था कि अभी तक तो ‘नीली आँखों और कोमल त्वचा’ वाली नैन्सी ही सबसे सुंदर है।

“कोई बात नहीं-डन”—कैप्टन कालिया ने अपना फोटोग्राफ लिफाफे से निकालते हुए कहा—“पहले मेरी प्रेमिका की फोटो और नाम तो देख लो।

फोटो देखते ही सभी मित्रों की आंखें आश्चर्य और अविश्वास से खुली रह गईं। वह फोटोग्राफ अपने समय की हिन्दी फिल्मों की एक नायिका की थी जिसे उस काल में हिन्दी फिल्मों की सबसे सुंदर नायिका माना जाता था। अविश्वास करने का कोई कारण नहीं था क्योंकि पांचों मित्रों में से कोई एक दूसरे से झूठ नहीं बोलता था। सबूत के तौर पर कैप्टन कालिया के पास अंतरंग अवस्था में अन्य कई फोटोग्राफ, पत्र और कुछ ऐसे गिफ्ट भी थे जो यह साबित करने के लिए पर्याप्त थे कि उनका बहुत प्रगाढ़ संबंध रहा था। फैसला लगभग हो चुका था फिर भी सभी ने शर्मा जी को भी अपना फोटोग्राफ दिखाने को कहा शर्मा जी ने सकुचाते हुए एक ब्लैक एंड व्हाइट फोटोग्राफ सामने रख दी।

पांचों मित्रों के बीच एक सन्नाटा पसर गया। इस मौन को कपूर साहब ने तोड़ा—“हां, कैप्टन आपका वोट?”

“शर्माजी,—उन्होंने इस बार ठहाका नहीं लगाते हुए बड़ी संजीदगी से कहा।

“मेरा भी”—खन्ना साहब ने अपनी फोटो उठाकर जेब में रख ली।

“नैन्सी, इनका मुकाबला नहीं कर सकती”—सरदार हरजीत सिंह भावुक हो उठे।

“मुझे कुछ कहने की जरूरत ही नहीं है”—कपूर साहब ने अपनी सुंदर सी पत्नी का फोटो जेब में डालते हुए कहा—“सुगन्धा इस शर्त को जानती है। पर उसे हारने का दुख नहीं होगा।”

शर्माजी अपने जीवन में पहली बार शर्त जीते थे। उनके चेहरे पर एक अजीब सा ओज था और आँखों में आँसू। उन्होंने बड़ी श्रद्धा से वह ब्लैक एंड व्हाइट फोटो उठाई और उसे माथे से लगाते हुए जेब में रख लिया। फोटोग्राफ के पीछे नाम की जगह लिखा था—‘माँ’।



फिक्र यहाँ सबको है।

रविन्द्र सिंह



फिक्र यहाँ सबको है
सब बेचैन दिखाई देते हैं।

बच्चों को परीक्षा की
महिलाओं को सुरक्षा की
पैसों के लिए नौकरी की
शादी हेतु छोकरी की
फिक्र यहाँ सबको है
सब बेचैन दिखाई देते हैं।

नेता को वोट की
विपक्ष पर चोट की
जनता को अच्छी सरकार की
एक सशक्त चौकीदार की
फिक्र यहाँ सबको है
सब बेचैन दिखाई देते हैं।

किसान को फसल की
परिवार को अच्छी नस्ल की
हताश वर्ग को जोश की
शराबी को अपने होश की
फिक्र यहाँ सबको है
सब बेचैन दिखाई देते हैं।

प्रेमी को इजहार की
प्रेमिका के इंतजार की
अच्छे साथी के मिलने की
या फिर दिल के टूटने की
फिक्र यहाँ सबको है
सब बेचैन दिखाई देते हैं।

उद्योगपति को माल की
गरीब को घर के हाल की
किसान को कर्ज की
सैनिक को अपने फर्ज की
फिक्र यहाँ सबको है
सब बेचैन दिखाई देते हैं।

रोगी को दवाई की,
डाक्टर को कमाई की
खिलाड़ी को हार की
धर्मगुरुओं को जयकार की
फिक्र यहाँ सबको है
सब बेचैन दिखाई देते हैं।



दोस्ती

संदीप कुमार



एक दिन जिंदगी ऐसे मुकाम पर पहुँच जाएगी।
दोस्ती तो सिर्फ यादों में ही रह जाएगी।
हर बात दोस्तों की याद दिलाएगी।
और हँसते - हँसते फिर आँख नम हो जाएगी।
ऑफिस के रूम में क्लासरूम नज़र आएगी।
पैसे तो बहुत होंगे।
लेकिन खर्चा करने के लम्हें कम हो जायेंगे।
जी ले खुल के इस पल को मेरे दोस्त।
क्योंकि जिंदगी इस पल को फिर से नहीं दोहराएगी।



मोबाईल युग

नरेन्द्र बड़गुजर



उठो लाल अब, आँखे खोलो।
मोबाईल ऑन करो, नेट खोलो।
चलो देख लो, वाट्सप पहले।
गुड मॉर्निंग से, खाता खोलो।
ज्ञान - जोक्स पर, पहले हंस लो।
कुछ सेव करो, कुछ फावर्ड कर दो।
दूसरी है, फेसबुक की बारी।
जहां दिखेगी दुनिया सारी।
देखो किसने क्या कर डाला।
किसने - कितना किया घोटाला।
कौन आज दुनिया में आया।
किसने किस को केक खिलाया।
ट्विटर की है, बात निराली।
चार शब्दों में गाथा - गाली।
उठो लाल अब आँखे खोलो।
मोबाईल ऑन करो, नेट खोलो।



ऊँ शांति..... ऊँ शांति

संदीप कुमार भसीन

शांति भर कर मेरे जीवन में
नूर से रोशन कर दिया
ज्योतिर्मय ज्योति बना कर
जगमग जगमग कर दिया
शांति भर कर मेरे जीवन में
शांति भर कर मेरे जीवन में
पवित्रता का सागर बनाया.....
नूरे इलाही तूने दिया
जोत हूँ मैं ज्योतिर्मय तू है
अपने ही जैसा मुझको किया
शांति भर कर मेरे जीवन में

सबका भला हो सबका भला हो
ऐसी दुआओं से भर दिया
सब ही सुखी हों हंसते रहे सब
कैसा यह सुन्दर मंजर किया
शांति भर कर मेरे जीवन में
सारे हैं अपने न कोई बेगाना
सभी को रहमत से भर दिया
खुशियाँ ही खुशियाँ है जीवन में
गमों को तूने दूर किया
शांति भर कर मेरे जीवन में।





(1)

कभी ए मुहब्बत ये बता क्यों छुपी है दिल की पनाह में
 मैं छुपा भी लूं तो तू बोलती है मेरी मासूम निगाह में।
 तू है ख़त किसी महबूब का, तू है आइना दिल-ए-ख़ूब का
 हैं बड़ी हसीन इनायतें तेरे दामन-ए-बेपनाह में।
 कभी तू सखावत से भरी, कभी कुफ़्र की है नज़र तेरी
 तुझे साएलों से भी वास्ता, तेरी कुर्बतें गम-ए-राह में।
 तू तो हर बशर का नसीब है, तू रकीब के भी करीब है
 जो नज़र चुराए जरा सी भी, तो बचे न कुछ भी निकाह में।
 तेरे सदके ये दिल-ओ-जान है, तू मेरा जमीर-ओ-ईमान है
 तू खुदा है तू ही इमाम है, तू नहीं किसी भी गुनाह में।
 गो मेरे यकीं पे यकीं नहीं, इस बात का भी यकीं नहीं
 तू ही मोतबर मेरे प्यार की, मैं भी राजदां तेरी चाह में।

(2)

मीठा सा बातों का ज़हर, छलबल से छलिया ने दिया
 मैं भी थी पूरी बावफ़ा, सारा का सारा पी लिया।
 ख़ामोशियों की शाम में सिहरन थी पहले प्यार की
 दो आंख का इक ज़ाम था, उसने लिया मैंने लिया।
 तन्हाइयों की शाम में चमकी जो सरूत आँख में
 तकती रही महताब को, धोखे से ग़म हल्का किया।
 मिटकर बने, बनकर मिटे, किस्से मुहब्बत के सनम
 मैं क्या कहूं दिलदार ने, किस बात का बदला लिया।
 इश्क़ भी है जादूगर, चलता नहीं सीधी डगर
 जज़्बात के पैमाने पर, ज़िंदा मरा मुर्दा जिया।
 मक़सद यही था इश्क़ का हासिल रहे तू उम्र भर
 ये सोचकर दीवानी ने, तुझको नहीं हासिल किया।
 बर्बादियों का दर्द-ओ-गम 'मीरा' सहा चुपचाप ही
 इल्ज़ाम की आवाज़ ने, हरसू तुझे रूसवा किया।



प्रार्थना

राजकुमारी



तेरे मंदिर मेरे दाता, तेरी पूजा को आई हूँ।
दो लेकर फूल श्रद्धा के चढ़ाने को मैं आई हूँ
मैं अज्ञानी हूँ, मैं नादां हूँ
मैं जो कुछ हूँ सो तेरी हूँ
पतित पावन है, नाम तेरा।
तेरे मंदिर मेरे दाता, तेरी पूजा को आई हूँ।
दो लेकर फूल श्रद्धा के चढ़ाने को मैं आई हूँ
तार दोगे तो तर जाऊँ,
डुबो दोगे तो क्या शिकवा।
भक्त वत्सल है नाम तेरा,
यहीं सुनकर मैं आई हूँ।
तेरे मंदिर मेरे दाता, तेरी पूजा को आई हूँ।
दो लेकर फूल श्रद्धा के चढ़ाने को मैं आई हूँ
तू सागर हैं मैं कतरा हूँ
इसी नाते से आई हूँ
तेरे मंदिर मेरे दाता, तेरी पूजा को आई हूँ।
दो लेकर फूल श्रद्धा के चढ़ाने को मैं आई हूँ

माँ

राहुल रहेजा



(एक कविता हर माँ के नाम)

घुटनों से रेंगते-रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ,
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ,
काला टीका दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है,
मैं ही मैं हूँ हर जगह
प्यार ये तेरा कैसा है?
सीधा-साधा, भोला-भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ
कितना भी हो जाऊँ बड़ा
“माँ” मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ



दहलीज

नीतू सिंह



वो औरत जो वक्त की
ऐसी दहलीज पर खड़ी
न तो पार कर सकती है
न सिमटना चाहती है
बढ़ना चाहती है आगे
सभी संस्कारों व रिवाजों को
साथ लेकर चलना चाहती है
नहीं चाहती तोड़ना
बंधे हुए रिश्तों का जाल
जिंदगी का एक नया तार
उसमें बुनना चाहती है
पर क्या समाज
देता है इसकी इजाजत?

कि वो अपने नियमों
रीति-रिवाजों से
कर सके अपने
मान-सम्मान की हिफाजत
चल सके, संकीर्ण रास्तों पर
बिना किसी सहारे
खुद के कदम
मजबूती से रखते हुए
पहुँच सकूँ अपनी
मंजिल तक
एक मुकाम बनाते हुए.....

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप

उम्मेद सिंह बीका



प्रातः स्मरणीय हिन्दू पति वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप का नाम हमारे इतिहास में अत्यंत गौरवमय एवं महत्वपूर्ण है। देश प्रेम, त्याग, बलिदान, संघर्ष आदि गुणों के प्रतीक प्रताप भारतीयों के लिए श्रद्धा तथा अभिमान का विषय बन गये हैं। भारत ही नहीं समस्त विश्व में उस स्वतंत्रता के पुजारी, स्वदेश अभिमानी, दृढ़ प्रतिज्ञ और नैतिकता के अग्रणी क्षत्रिय की एक अमिट छाप है। मेवाड़ नरेश होते हुए भी उनके जीवन का अधिकांश समय वनों व पर्वतों में भटकते हुए बीता। अपने अद्भुत साहस और दृढ़ इच्छा शक्ति तथा अपूर्व रण-कौशल के बल पर वह मेवाड़ को स्वाधीन रखने में सफल हुए। उनके जैसा व्यक्तित्व देश एवं समाज के लिए युग युग तक प्रेरणादायी होता है।

मेवाड़ के सूर्यवंशी राजवंश में गुहिल और बप्पा रावल के वंश में अनेक पराक्रमी शासक हुए जिनमें महाराणा उदयसिंह के पुत्र प्रताप का नाम विशेष ख्याति प्राप्त है। रानी जसवंत बाई सोनगरा के गर्भ से प्रताप का जन्म 30 मई 1539 को हुआ। 28 फरवरी 1572 में उदयसिंह की मृत्यु के बाद प्रताप मेवाड़ के शासक बने। महाराणा उदयसिंह ने अस्वस्थ होने पर अपनी छोटी रानी धीरबाई भटियाणी के पुत्र जगमाल को चुपचाप युवराज घोषित कर दिया था। प्रताप बड़े पुत्र होने के कारण परम्परानुसार शासन के असली हकदार थे परन्तु ऐसे समय में भी उन्होंने धैर्य नहीं खोया। अपने अधिकार के लिए वह अपनी मातृभूमि पर अपने ही बंधुओं का खून नहीं बहाना चाहते थे और न ही ऐसे संकट के समय में फूट का बीज बोना चाहते थे। उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम की तरह पिता की आज्ञा को सर्वोपरि मानकर मेवाड़ से चले जाना ही उचित समझा, परन्तु मेवाड़ के सरदारों ने ऐसे संकट के समय प्रताप को किसी भी हालत में खोना उचित नहीं समझा और सलूम्बर के रावत कृष्णदास, रावत सांगा, ग्वालियार के राजा रामशाह तंवर और प्रताप के मामा पाली के मानसिंह सोनगरा ने सभी सरदारों को अपने पक्ष में करके जगमाल के स्थान पर प्रताप को गद्दी पर बिठाया। यहीं से मेवाड़ में गृह कलह ने जन्म लिया, जिसकी परेशानी प्रताप को जीवनभर उठानी पड़ी। जगमाल और शक्तिसिंह जैसे भाई अकबर की शरण में चले गये। उत्तराधिकार में प्रताप को छिन्न-भिन्न मेवाड़ का राज्य और शक्तिशाली मुगल सम्राट अकबर की शत्रुता ही प्राप्त हुई। चित्तौड़ और मेवाड़ का काफी बड़ा क्षेत्र अकबर के अधिकार में चला गया था।

अधिकांश राजाओं को अकबर ने प्रलोभन देकर अथवा सैन्य बल से अपने अधिकार में कर लिया था। परन्तु प्रताप को नहीं डिगा सके। प्रताप ने संघर्षमय सम्मानपूर्ण मार्ग को अपनाया। अकबर के सेनापति जयपुर के राजा मानसिंह के नेतृत्व में संधिवार्ता और आक्रमणों का प्रताप ने मुहताब जबाब दिया। सन् 1576 में हल्दीघाटी का प्रसिद्ध युद्ध मुगलों और राजपूतों का निर्णायक संघर्ष था। अकबर की विशाल सेना का प्रताप ने मेवाड़ के प्रमुख राजपूतों और भीलों की सहायता से मुकाबला किया। घायल अवस्था में चेतक उन्हें युद्ध भूमि से दूर ले गया परन्तु रास्ते में ही चेतक ने दम तोड़ दिया। प्रताप का पीछा करते हुए मुगल सैनिकों को देखकर शक्तिसिंह ने भाई पर आये संकट को भांप लिया और मुगल सैनिकों का वध करके और अपना घोड़ा प्रताप को देकर भाई के प्राण बचाये। हल्दीघाटी के युद्ध में बड़ी तादाद में सैन्य शक्ति क्षीण होने पर भी प्रताप ने धैर्य नहीं खोया। और पहाड़ों में शरण लेकर पुनः अपनी शक्ति संगठित करनी प्रारम्भ की। जनता का उनको भरपूर सहयोग मिला। और मेवाड़ एक विशाल सेना के रूप में संगठित हो गया।

राणा प्रताप ने जीवन पर्यन्त संघर्ष करते हुए बिताया और मेवाड़ को स्वतंत्र कराया तथा मेवाड़ में सुख शांति स्थापित करने में सफल हुए। अपनी प्रजा पर इन्हें अपार स्नेह था। ऐसे जनप्रिय शासक प्रताप का 19 जनवरी 1597 को देहान्त हो गया। अपने असाधारण देशाभिमान, वीरता और चरित्र की दृढ़ता के कारण प्रताप भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रतीक बन गये। प्रताप सच्चे अर्थों में अमर हैं। प्रताप का व्यक्तित्व और कर्तव्य हमको राष्ट्रभक्ति और राष्ट्र गौरव की रक्षा के लिये सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा देते रहेंगे।

॥ जय हिन्द ॥

जंगी सिपाही

मूल लेखक: सुभाष भास्कर

अनुवाद : राजेश पंकज



बहरामपुर जमींदारी सड़क से हटकर कीकर एवं नीम के झुरमुट में छिपा हुआ एक गांव है। गांव में घुसते ही प्रवेश - द्वार के समीप कुआं है जिसके इर्द - गिर्द पाँच - सात दुकानें हैं रहट चल रहा है। एक ओर स्त्रियां घड़ो में पानी भर रही हैं और दूसरी तरफ पुरुष और बालक नहाने - धोने में मग्न हैं। कुछ लोग खाल पर मवेशियों को पानी पिला रहे हैं। हकला कैला जिसका माथा चौड़ा और घनी दाढ़ी है कानों में मुरकियां पहने, कुण्डलदार मूँछों को ताव देता प्रतिदिन के समान आज भी दरवाजे पर आ बैठा है। उसने सारी उम्र तिनका तक नहीं तोड़ा और ऐशो - आराम में जीवन बिताया है। चार बीघे जो उसके हिस्से के हैं, उन के दम पर ही उसके भाई - भाभियां उसकी सेवा में कोई कमी नहीं छोड़ते। उसके साथ ही दो - तीन तमाशबीन निठल्ले और रूंदु छींबा आ बैठे हैं। उनका नित्य प्रति का काम है आती - जाती स्त्रियों पर फब्तियां कसना और जमाने भर की बातें करना। रोज वे किसी न किसी की राम - कहानी छोड़ लेते हैं और उनका दिन गुजर जाता है। आज उन्होंने फौजी राम सरूप को घेर लिया। उसे दूर से आते देख दोनों हाथ उठा कर जोड़ते हुए रूंदु ने कहा “आ जाओ पण्डित जी धूप सेंक लो।”

फिर धीरे से कैले के कान में फुसफुसाते हुए कहा “फौजी आधा संसार घूमा है? तू एक बार छेड़ देना, फिर देखना न बसरे - बगदाद की न सुनाई तो कहना। नब्बे से ऊपर है पर बुढ़ऊ की खुराक पूरी है।

राम सरूप खाली था, टाइम पास करने को रास्ता पार करता आ पहुँचा रूंदु व उसके साथियों के पास। उसका पक्का रंग, मशाल जैसी चमकती आँखें, ऊँचा - लम्बा कद और दाढ़ी ऊबड़ खाबड़ शेव की हुई थी। कपड़े - लत्ते एकदम सुधरे। वह हमेशा अपनी मिलिट्री वाली जाकिट पहने रहता। नब्बे से ऊपर होने के बावजूद उसकी स्मरण - शक्ति पूरी तरह से बरकरार थी।

रूंदु ने अंगोछा झाड़ कर बिछाते हुए कहा, “आ जाओ पण्डित जी, बैठ जाओ।” पण्डित राम सरूप जिसे लोग अक्सर फौजी साहब बुलाते थे, झिझकते हुए धूप तापने के लिए अंगोछे पर बैठ गया।

इतने में कैले ने चरण - स्पर्श करने के बाद छोड़ते हुए कहा, “पण्डित जी सुना है कि आप भी विश्वयुद्ध के समय कई देशों में घूमे हो। ये युद्ध छिड़ा कैसे था, हमें भी जरा लड़ाई के बारे में बताओ।”

वह सूरज की ओर ताकता अपने दाहिने हाथ की उंगलियों से अपना कपाल को खुजलाते हुए बोला, “बस चुप ही बेहतर है कैले, क्या विश्व घूमा, कई बार तो मौत के मुंह से बचा हूँ। अब तो याद करके भी झुरझुरी आती है। “इतना कह कर फौजी गुमसुम सा एक ओर ताकने लगा।

“कैले! पहला विश्वयुद्ध यूरोप से शुरू हुआ था जिस में सत्तर मिलियन से भी ज्यादा जवानों को मिलिटरी के लिए लड़ने को उकसाया गया था। इतिहास की यह बड़ी जंग कई मिलियन नागरिकों और फौजियों को लील गई थी। इसके दो दशक बाद ही सितम्बर 1939 में हिटलर ने पोलैंड पर पश्चिम की ओर से धावा बोल दिया। दो दिन बाद ब्रिटेन ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। देखते - देखते तीस से भी ज्यादा देश इस दूसरे महायुद्ध में कूद पड़े। करीब पचास मिलियन फौजी और आम नागरिक फिर मारे गए। पूरे संसार में छिड़ी यह जंग आखिर हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिरने के बाद स्वतन्त्र हो गई और पीछे छोड़ गई विनाश का भयानक दृश्य।”

ताव में आकर फौजी फिर शुरू हो गया। “बात उन दिनों की है जब मैं अपने गांव की पाठशाला में छठी जमात में पढ़ा करता था। कुराली उन दिनों मिलिट्री की भर्ती का केन्द्र था और लोग फौज में भर्ती होने के लिए वहां जाया करते थे। एक दिन गांव के निठल्ले लड़कों के साथ मैं भी भर्ती होने चला गया। हम में से कई लड़के पैमाइश में असफल हो गए। मेरा डील - डौल अच्छा था। उम्र तो मेरी अभी अठारह की हुई नहीं थी, परन्तु मुझे अंग्रेजों ने भर्ती कर लिया। कैले बस ऐसे ही घरवालों से पूछे बिना मैं फौज में भर्ती हो गया।”

“जब गांव लौटने पर मां को पता चला तो वह नाराज हुई,” पर जब मिलिट्री का बुलावा आया तो जाना अनिवार्य था। निश्चित तारीख को मैं कुराली में मिलिट्री केन्द्र जा पहुँचा। मिलिट्री में ‘नो सर’ का कोई काम नहीं, बस वहां तो एक ही बात होती है जोर से सैल्यूट मारो और ‘येस सर’। वहां से सीधे हमें ‘चक लाला’ (अब पाकिस्तान में) भेज दिया जो इस्लामाबाद से समीप मिलिट्री का सिखलाई केन्द्र था।

मैने वहां ड्राइवर के लिए अपना नाम लिखवा दिया। छः महीने की ट्रेनिंग के बाद हमें बीस दिन की छुट्टी मिली। कई लोग तो छुट्टी आ कर वापिस गए ही नहीं, पर मैं वापिस चला गया। बीस रुपये महीना तनख्वाह थी। वहां से हमारी पलटन को बम्बई भेज दिया गया। जहां से समुद्री जहाज द्वारा हम इराक के शहर बगदाद में जा पहुँचे। हम अंग्रेजी फौज की ओर से लड़ते थे। मैं क्योंकि ड्राइवर था, मैं बड़ा ट्रक चलाया करता था। बगदाद से हमारी पलटन ईरान के शहर बसरा जा पहुँची।”

“फिर फौजी साहब बसरे की हूरें नहीं देखी” कटाक्ष सा करता रूल्डू छींभा बोला।

“लो जी, हूरें कहां सूझती वहां। जंग ने खलबली मचा रखी थी। नजरो के सामने केवल मौत ही नाचती थी। नाल वाले मोटे – मोटे मिलिट्री बूटों के साथ परेड से हमारे दिमाग खोखले हो चुके थे। बस जिधर का हुक्म होता ‘येस सर’ बोल कर उसी तरफ चल देते। फिलस्तीन, सीरिया से मिस्र होते हुए हम इटली जा पहुँचे। मिस्र के बारे में तो यह कहा जाता था कि आजाद मुल्क का कुत्ता जो कर सकता था पर गुलाम मुल्क का आदमी नहीं।”

जब हम जर्मनी में दाखिल हुए, जर्मनी की फौज ने हमारी बुरी गत बना दी। निर्दोष भोले भाले फौजी जवान बीस रुपये के लालच में भर्ती हुए। हम लोग जर्मनी के मौत के कैम्प में आ फसे। हमें बहुत यातनाएं दी गई। भूखे हाल रखा जाता था और निर्ममता से हमसे काम लिया जाता था। ओखली में सिर रखा तो मूसलों का क्या डर। वहां मां और गांव की बहुत याद आती थी। यहूदियों पर क्या कम अत्याचार हुए? कहा जाता कि उन्हें मौत के घाट उतारने पर क्षमा कर देना चाहिए क्योंकि इन की खाल से निकली चर्बी ईंधन के काम आएगी और बाल गद्दों में भरने में। बस यार, वही बात थी जैसे हम पशुओं की बलि देते हैं और दोष ईश्वर पर डाल देते हैं कि वह बलि मांगता है। नाजी लोग यहूदियों पर बहुत अत्याचार करते थे।

एक दिन की बात है कि हमारे ऊपर संतरी पहरा लगा हुआ था। हम भी एक मौत के समान उस कैम्प में फसे हुए थे। कानों – कान मुझे खबर मिल गई कि सुबह – सवेरे हमें ट्रक में लाद कर ले जाएंगे। एक फैक्टरी की जलती भट्टी में हमें ईंधन के रूप में झोंका जाना था। हमें नींद कहां? रात को संतरी की आँख लग गई। हम कई लोग रात में भाग निकले। यदि पकड़े जाते तो सीधे गोली मिलती। पर हम किसी न किसी प्रकार बचते – बचाते इटली में दाखिल हो गए। वहां से हम सभी अलग – अलग हो कर बिखर गए।

मुझे किसी के घर में हैल्पर का काम मिल गया और वे मुझे दोनों वक्त का खाना दे देते थे। कई वर्ष तक ऐसे ही दबी हुई उधार सी जिन्दगी जीने के बाद जब युद्धविराम हुआ तो हम लोग फिर से अपने कैम्प में लौट आए। बिग्रेडियर साहब ने पूछा कि इतने दिन कहां रहे। तो हम ने अपनी व्यथा कथा का वर्णन किया। फोन आदि तो आस – पास भी नहीं थे। हमें तो चिट्ठी लिखने का भी अधिकार न था। हम लोगों में से एक ने चिट्ठी लिखने की कोशिश की तो पता चला गया। उसके दोनों हाथ काट दिये गये। चकुंदर की तरकारी के साथ बस दो रोटी मिलती थी। भूखे पेट यूँ ही गुजारा करते। काम बहुत ज्यादा लेते थे। कभी खाली नहीं बैठने देते थे। और कुछ नहीं तो बंकर ही खुदवाते रहते थे।

हमारे पास दस्तावेज होते थे, हमें सरख्त हिदायत दी गई थी कि यदि बन्दी बना लिया तो फौरन दस्तावेज जला देना। जिन्होंने दस्तावेज जलाए उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया। क्योंकि हमने दस्तावेज जलाए नहीं थे, युद्धविराम होते ही हमें वापिस भेज दिया गया। मिस्र से गुजरते समय उनके खूबसूरत शहर में भगवान कृष्ण का एक बहुत सुन्दर मंदिर देखा तो वहां होते हुए समुद्री जहाज द्वारा अस्बाब लाद कर हम इस्लामाबाद लौट आए। वहां से हमें हमारे गांव बहरामपुर भेज दिया गया।

मैने लौट कर गांव की मिट्टी को माथे से लगाया और सुख की सांस ली। कैले! यह था मेरा मिलिट्री का सफर।” करते हुए फौजी उठ कर अपने घर चला गया और कैला खाना खाने घर की ओर। रूल्डू ने अंगोछा उठा कर झाड़ा और अपने कंधे पर रख कर कुएं पर आकर नहाने लगा। वह सोच रहा था कि कितना कठिन जीवन था फौजी का। पर दूसरी ओर वह यह देख कर खुश हो रहा था कि कितनी सुविधाएं मिलती हैं फौजियों को पेंशन के साथ। और फौजियों को हमेशा सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। ऐसा लगता है वे हमारे वास्तविक रखवाले हैं।



‘सपने.....और काँच’

आलोक शर्मा



सपने.....

होते ही हैं
काँच की मानिंद
चमक और तीखापन लिए
मगर.....
गिरने पर.....या कहे
धरातल से टकराने पर
टूटते ही है.....सपने

क्योंकि दोस्त.....
सपने होते ही हैं
काँच की मानिंद

सपने....

पिघलते भी हैं
विचारों की आँच में
तभी तो
पिघलने का
गुण होता है काँच में

काँच.....

जो सुहागन की
कलाई में
सपना बनकर
खनकता है

काँच.....

जो सपनों की
तरह ही
अर्थी पर
टूटता है
काँच.....
जो आईना बनकर

वास्तविकता नहीं

सिर्फ....चेहरा
दिखाता है
वास्तविकता.....?
सपने भी नहीं दिखाते
इसलिए.....दोस्त
सपने होते ही हैं
काँच की मानिंद

सपने.....

पलते भी हैं
काँच से नाजुक
बच्चों की तरह
थपकियों के साथ
और न जाने कब
चले जाते हैं
दूर.....बहुत दूर
अपनों की तरह
काँच की—सी
चुभन दिए

सपने.....

जो काँच की
दमक से ज्यादा
उसके
टूटने से जुड़े हैं

इसलिए.....दोस्त

सपने.....
होते ही हैं
काँच की मानिंद



नैतिक मूल्यों का पतन

राजेश 'पंकज'



नैतिक मूल्यों का पतन आज के युग का एक ज्वलंत विषय है, इस पर अपने विचार व्यक्त करने से पूर्व इस विषय को समझना भी आवश्यक है। नैतिक मूल्य क्या हैं? यदि मोटे तौर पर देखा जाए तो प्राचीन काल से चली आ रही परंपराओं को ही नैतिक मूल्य कहा जाता है। नैतिक मूल्य में दो शब्द निहित हैं, नैतिक तथा मूल्य नैतिक का अर्थ है नीति पर आधारित मूल्य का अर्थ है विश्वास तथा परंपराएं। नीति का जन्म हमारी संस्कृति से होता है जिसके मुख्य अंग हैं प्राचीन धर्म ग्रंथ, सामाजिक रीति रिवाज, उपासना शैलियाँ तथा शासन द्वारा स्थापित नियम। इन सभी अंगों से उपजी परंपराओं को ही नीति अथवा नैतिक मूल्य कहा गया है। जिन अर्थों में हम भारतीय नैतिक मूल्यों का उल्लेख करते हैं उनकी प्रासंगिकता हमारे देश की संस्कृति पर आधारित है। समय अबाध गति से चलता है और समय के साथ सामाजिक परिवेश में परिवर्तन आता है और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप जीवन शैली तथा परंपराओं में बदलाव आता है।

अर्थात् जो परंपराएं पहले से चली आ रही हैं उनमें से कुछ का रूप बदल जाता है और जो परंपराएं वर्तमान में प्रासंगिक नहीं रहती वे गौण अथवा लुप्त होती जाती हैं। इस प्रक्रिया को ही आज हम पतन के रूप में परिभाषित करते हैं। मनुष्य का स्वभाव है कि उसने अपने पूर्वजों या माता - पिता से जो कुछ सीखा है, वह उसे अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लेता है।

और वह बढ़ने पर जब वह अपने माता पिता की छत्रछाया से अलग होता है, तो उसका अपना व्यक्तित्व विकसित होता है। तब समाज में विचरण करते हुए उसे अनेक नए अनुभव होते हैं, जिनके कारण उसकी सोच तथा व्यवहार में नए परिवर्तन आते हैं। और अपनी सुविधा के अनुसार वह नई परंपराएं स्थापित करता है और कुछ पुरानी परंपराओं को बदलता है या त्याग देता है। इस परिवर्तन को उससे पहले वाली पीढ़ी अर्थात् माता - पिता पतन के रूप में देखते हैं। जिन बातों को वे लोग चिरंतन सत्य मानते रहे हैं, उनका त्याग देखकर उन्हें कष्ट होता है।

भले ही हम नैतिक मूल्यों के पतन को आधुनिक युग का परिणाम मानते हैं, परंतु हमें याद रखना चाहिए कि जो समय अब प्राचीन बन चुका है वह भी अपने वर्तमान काल में आधुनिक ही था। समय गति सदा आगे की तरफ रहती है, इसी प्रकार जीवन तथा परंपराएं भी विकासशील होती हैं। यह केवल हमारा दृष्टिकोण है कि हम परिवर्तन को विकास माने अथवा पतन मानें। आज सूचना तथा संपर्क क्रांति का युग है। इस युग ने हमें आश्चर्यजनक सुविधाएं दी हैं। आज प्रौद्योगिकी ने ही संपूर्ण विश्व को एक समाज के रूप में बांध दिया है। प्राचीन काल में ऐसी सुविधाएं ना होने के कारण विश्व की विभिन्न संस्कृतियाँ अलग - अलग तथा असंपर्क रहती थीं। इसी कारण पहले परंपराएं तेजी से नहीं बदलती थी। केवल ऐतिहासिक घटनाओं जैसे युद्ध प्राकृतिक आपदाओं के कारण विभिन्न संस्कृतियों का मिश्रण होता था और समाज का रूप बदलता था। आज का युग संसार की सभी संस्कृतियों के परस्पर संपर्क में आने का युग है सभी संस्कृतियों की अलग - अलग परंपराएं परस्पर मिलकर एक नई वैश्विक संस्कृति को जन्म देने वाली हैं। ऐसे उलझन वाले समय में आवश्यक यही है कि हम अपनी परंपराओं की अच्छाइयों और बुराइयों पर विचार करें और अच्छी परंपराओं का त्याग न करें। इसके साथ अन्य संस्कृतियों से आने वाली सभी परंपराओं का अंधानुकरण ना करें तथा विवेक पूर्वक अच्छी परंपराओं को खुले मन से ग्रहण करें। नए युग की परंपराएं मानवता के कल्याण के लिए स्थापित होनी चाहिए। ऐतिहासिक गलतियों पर विचार करते हुए हमें कुरीतियों से नहीं चिपकना चाहिए। ये कुरीतियाँ केवल प्राचीन परंपराओं में ही नहीं हैं बल्कि नई स्थापित होने वाली परंपराओं में ही नहीं हैं प्राचीन युग में स्थापित की गई परंपराएं हमारे पूर्वजों ने अपने जीवन काल के अनुभवों के आधार पर बनाई थी। पुरानी पीढ़ी को चाहिए कि वह अपने अनुभवों के आधार पर नई पीढ़ी का मार्गदर्शन करें तथा नई कुरीतियों से उसकी रक्षा करें। नई पीढ़ी को भी सभी प्राचीन परंपराओं या नैतिक मूल्यों की तिलांजलि देने से बचना चाहिए और अपने विवेक के साथ - साथ पुरखों के अनुभवों का भी लाभ उठाना चाहिए। नैतिक मूल्यों के पतन को विवेक तथा धैर्य के साथ विकास में बदलना चाहिए। परिवर्तन को पतन का नाम देने से समस्या का समाधान नहीं होगा। कुरीतियों का त्याग कर हम पतन को उत्थान में बदल सकते हैं। परंपरा के नाम पर हम समानता, शिक्षा, संपन्नता और ज्ञान - विज्ञान के रास्ते में बाधा नहीं डालेंगे। कुछ बुरी परंपराओं ने हमारे मन में अन्य संस्कृतियों के प्रति निरादर के बीज बोए हैं। नई पीढ़ी को ऐसी बुरी परंपराओं और पूर्वाग्रहों की विरासत न दे तो भविष्य उज्ज्वल होगा।





ईश्वर ने जब सृष्टि का निर्माण किया तो सबको एक सा नहीं बनाया किसी को शक्तिशाली तथा किसी को कमजोर बनाया। प्रारंभ से ही यही चला आ रहा है। हमेशा बलशाली कमजोर को दबाता आया है। राजशाही के दिनों में जब आधुनिक हथियार नहीं होते थे तो शारीरिक बल को ही प्रभाव जमाने का पैमाना माना जाता था, परन्तु आधुनिक युग में यह पैमाना बदल गया है। अब आपको आपकी आर्थिक स्थिति समाज में प्रभाव शाली बनाती है और ये दुनिया भी ताकतवर को सलाम करती है चाहे वो कैसा भी व्यवहार क्यों ना रखता हो यदि वो अमीर है तो लोग उसके आगे नतमस्तक होने को हमेशा तत्पर रहते हैं।

मेरे निजी जीवन में घटित एक घटना को उद्धृत करना चाहूँगा। रोज की तरह कार्यालय से घर की तरफ जाते हुए एक मूंगफली वाले के पास मोटरसाईकिल रोककर मैंने सोचा थोड़ी घर के लिए ले चलूँ। मैं खड़ा ही था कि इतने में मजदूर वर्ग का एक व्यक्ति साईकल पर आया और उसने पूछा! “कैसे दी मूंगफली? मूंगफली वाला बोला, “अरे। नीचे भी उतरेगा या वही खड़ा रहेगा?”

मजदूर बोला “भाई साहब, साईकल पर काफी सामान है और इसका स्टैंड भी कमजोर है आप ही उठकर जरा मूंगफली दे दो।”

दुकानदार गुस्से से, “क्या कलेक्टर हो जो नीचे नहीं उतर सकते। लेनी है तो लो वरना चलते बनो, हम तुम्हारी नौकरी करने के लिए नहीं बैठे हैं”

मजदूर बेचारा किसी तरह साईकल को पेड़ के सहारे खड़ा करके आया।

(परिवार बढ़ा था शायद उसका) बोला, “भाई एक किलो दे दो”

दुकानदार ने एक किलो मूंगफली तोली मजदूर ने चुपचाप 120 रुपये दिए और चला गया। इतने में वहाँ एक गाड़ी आकर रूकी। गाड़ी के शीशे बंद थे, गाड़ी का हॉर्न बजा। मूंगफली वाला एकदम उठकर गाड़ी के ओर लपका मानो स्वयं ब्रम्हादेव स्वर्ग से उतरकर पृथ्वी पर उसकी मूंगफली खाने आये हो। गाड़ी का शीशा हल्का सा खुला “भाईया कैसे दे रहे हो मूंगफली?”

“120 रुपये किलो।” दुकानदार बोला

“इतनी मंहगी वहा पीछे तो 100 रुपये किलो मिल रही है”

नहीं साहब। मूंगफली अच्छी क्वालिटी की है।”

“साहेब जरा चख कर देखो, नयी फसल की है।”

गाड़ी वाला मूंगफली खाने के बाद, “हां! पर इतनी खास नहीं है ऐसा करो 100ग्राम दे दो।”

वो दौड़कर जाता है और 100 ग्राम तोलकर ले आता है

“12 रुपये साहब”! दुकानदार बोला।

“अरे यार ! 2 रुपये खुल्ले नहीं ऐसा करो 10 रख लो फिर एडजस्ट कर लेंगे और दुकानदार की बात सुने बिना ही उसने गाड़ी आगे बढ़ा दी। दुकानदार फिर अपनी भट्ठी के पास आकर बैठ गया

मैं वहीं अपनी बाइक को स्टैंड पर खड़ा करके उसपर बैठ कर ये नजारा देख रहा था

मैं नीचे उतरा और उसके पास आकर बोला, भाई साहब जरा वो नोट दिखाना जो वो गाड़ी वाला देकर गया’।

दुकानदार: “क्यों भाई साहब ऐसा उसमें क्या खास है जो आप वही नोट देखना चाहते हो, मैंने कहा कि मैं ये देखना चाहता हूँ की जिस नोट के लिए आपने इतनी दौड़ धूप की, तीन बार आप उठकर गए, कीमत से 2 रुपये कम लिए हो सकता है वो नोट

अमेरिकन डॉलर से भी कीमती हो।”

दुकानदार: “अरे! काहे मजाक कर रहे हो भाई साहब ! दस का नोट अमेरिकन डॉलर से भी कीमती हो।”

“तो फिर भईया, एक बात बताओ वो मजदूर क्या आपको नेपाली करेंसी दे गया क्या? एक चीज आपको ध्यान रखनी चाहिए दोनों ही आपके ग्राहक थे, एक बेचारा जो आपके पास आने में असमर्थ था उसके लिए आप खड़े नहीं हुए जबकि गाड़ी वाले के लिए आपने तीन चक्कर लगाये, साइकल वाला आपसे क्या ले गया और वो गाड़ी वाला आपको क्या दे गया। किसी की हालत देखकर उससे व्यवहार मत करो। अगर कोई अमीर है तो अपने लिए है वो आपको कुछ नहीं देगा, याद रखो जो आपको सम्मान दे रहा है उसे सम्मान अवश्य दे चाहे वो किसी भी स्तर का ही क्यों ना हो।” इतना कहकर मैं अपनी राह चल दिया चलते चलते मैं ये सोच रहा था की वो मूंगफली वाला ही क्या सारी दुनिया का यही हाल है यहाँ तक की मेरे ऑफिस में भी।

यहाँ भी वही, लोग लेवल के हिसाब से बात करते हैं अपने से निचले स्तर के कर्मचारियों से लोग उतनी आत्मीयता से पेश नहीं आते जितने कि अपने वरिष्ठ कर्मियों से। कार्यालय में काम करने वाला हर व्यक्ति किसी का जूनियर होता है और किसी न किसी का सीनियर। मगर यहाँ भी सभी की वही मानसिकता होती है सीनियर के सामने नतमस्तक और जूनियर से ढंग से बात भी नहीं करनी। काश ! इन सीनियरों को कोई समझा पाता की यदि आप सीनियर है तो किसी जूनियर की वजह से। यदि किसी के नीचे कोई जूनियर ही नहीं होगा तो वो सीनियर कहाँ कहलायेगा। दुनिया में कोई भी चीज तब ही बड़ी होती है जब उसके सामने कोई छोटी चीज रखी जाती है मेरे विचार से कम से कम जिन लोगो की वजह से आपका वजूद है एक सीनियर के रूप में कुछ तो सम्मान उनके लिए भी व्यक्त करे तो शायद आपका जूनियर भी थोड़ी खुशी महसूस करेगा। यह सोचते-सोचते मैं, कार्यालय का सबसे जूनियर कर्मि घर पहुँच गया। पत्नी ने दरवाजा खोला। थका हारा मैं सोफे पर बैठ गया वो मेरे लिए पानी लाई फिर चाय लायी। उसे ये सब करते देखकर मैं मन ही मन सोच रहा था कि कार्यालय में मैं सबसे जूनियर ही सही पर मेरी पत्नी ही है जो मुझे भी सीनियर बना देती है। धन्य हो तुम नारी।



चित भी अपनी और पट भी.....

पंकज शर्मा

“देवी यह लो ताबीज़ और जिस विधि से मैंने बताया है, वैसे ही इसे ग्रहण करना। कोई चूक न होने पाए। इसकी पूजा - अर्चना की विधि थोड़ी कठिन अवश्य है, परन्तु यदि सफल हो गई तो तूम्हें संतान के रूप में अवश्य पुत्र की ही प्राप्ति होगी”, संत महाराज ने उस महिला से कहा जो ‘पुत्र प्राप्ति’ हेतु प्रयासरत थी और आज यहां एक तथाकथित प्रसिद्ध संत के पास आशीर्वाद लेने आई हुई थी। संत महाराज के मुख से शुभ वचन सुनकर उसने खूब सारा चढ़ावा चढ़ाया और प्रसन्न होकर वहां से प्रस्थान कर गई।

उसके जाते ही संत के मुंह लगे शिष्य ने चिंता व्यक्त की, “महाराज, वह नामी गिरामी हस्ती की पत्नी है। आपके कहे मुताबिक अगर कहीं लड़का न हुआ तो ? मुझे डर है कि कहीं कुछ हमारा ही अनिष्ट।”

संत जी मुस्कुराए, “कुछ नहीं होगा, तुम नाहक चिंता मत करो। लड़का या लड़की, दोनों मे से ही तो एक होना है, जोखिम बहुत कम है। कहीं तीर - तुक्के में भाग्य से लड़का हो गया तो हमारे वारे - न्यारे हो जाएंगे। सारी उम्र के लिए हमारे मुरीद हो जाएंगे.....।”

“और अगर नहीं हुआ तो ?” शिष्य दूसरे परिणाम के सम्बन्ध में ज्यादा चिंतित था, बीच में ही बोल पड़ा।

“नहीं हुआ तो कह देंगे कि देवी तुम्हारी पूजा अर्चना की विधि में कहीं कमी रह गई होगी, जिससे संतान पुत्र होते - होते पुत्री में बदल गई.....”, संत जी ने वैसा ही अभिनय करते हुए कहा मानो वह स्त्री सामने बैठी हो।

“यानी चित भी अपनी और पट भी”, शिष्य खुशी से उछल पड़ा।

“हाँ”, संत ने सुर में सुर मिलाया और दोनो खिलखिला कर हँस दिए।



जल है तो कल है

विनय कुमार गर्ग



शायद जल बड़ा ही बेमोल है
तभी इसीलिए जल
छत की टंकियों की ओवरफ्लो में
तो कभी जमींदोज पाइपों की लीकेज में,
कभी अमीरों के लॉन में
तो कभी क्लबों के तरण-तालों में
बेचारगी से बहता है।

शायद जल बड़ा ही लाचार भी है
तभी हर कोई अपनी गंदगी इसमें बहा देता है
दुनिया में जल के स्रोत भी हैं अनंत शायद
तभी परवाह नहीं हमें कल की
आने वाली पीढ़ियों हेतु जल की।

क्या सही में जल है महत्वहीन
नहीं है गौर ए काबिल
तभी करते हैं दोहन इसका बेदर्दी से
जल क्या है ?.....
जल जीवन है।
जल है, तो कल है।
आज बचाएंगे तो कल पाएंगे।

जल की कीमत पूछनी ही है तो पूछो उन.....
कंक्रीटों के जंगल में रहने वाले बाशिंदों से
महाराष्ट्र, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश और ना जाने
कितने ही राज्यों के गिरते जल स्तर से
जल के लिए प्यासे मरते मवेशियों से

दो बूंद जल के लिए तड़पते पंछियों से
मीलों दूर से ढोकर लाने वाले महिलाओं से,
बच्चों से
चिलचिलाती धूप में झुलसते राहगीरों से
रेगिस्तान के तपते समंदर में झुलसते जीवन से।
लापरवाही में यूँ ही
ना खो देना ये बेमोल नेमत कुदरत की
अन्यथा जल जाएगा विश्व
तीसरे विश्वयुद्ध की ज्वाला में।

स्तर गिरता जा रहा है सर्वत्र भूजल का
वर्षा का जल, सड़कों से-गंदे नालों में
और गंदे नालों से-खारे समंदर में
बह-बहकर होता जा रहा बर्बाद है।

माना इंसान है आज बड़ी दौड़ में
लगा है 21वीं सदी की होड़ में
फिर भी क्यों करें हम इंतजार
चिड़िया के खेत चुगने का
और धरा से जल के मिटने का।

क्यों नहीं हम करते संचयन जल का
क्यों नहीं हम बनते मितव्यई जल का
क्यों नहीं है मान कुदरत की अनमोल देन का
क्यों नहीं हम सोचते कल की
क्यों नहीं हम रोकते बर्बादी जल की
क्यों नहीं हम करते खुद से शुरुआत नए कल की ॥



हिंदी दिवस

संजीव कुमार



आओ चलें हम हिन्दी दिवस मनायें
सब हिंदी के प्रति अपनी इच्छा शक्ति दिखायें

सरल-सहज हिंदी का प्रयोग करें
जन-मानस तक अपनी बात पहुँचाएँ

आओ चलें हम हिंदी दिवस मनायें.....।
लिखने - बोलने में संकोच न करें

राष्ट्रभाषा के प्रति दृढ़ - संकल्प दिखायें,
है यह भाषा आपस का सूत्र धार
संभव है इससे ही प्रचार-प्रसार
आओ चलें हम हिंदी दिवस मनायें.....।

हमारे दिलों में जब राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज का सम्मान
राष्ट्रभाषा के लिए भी नतमस्तक हो जाए हम
टिप्पणी, मसौदा हिंदी में ही करें
अंग्रेजी की गुलामी से सोच को आजादी दिलाएँ
आओ चले हम हिंदी दिवस मनायें.....।



बेटियां

नीलम बरार



यूँ तो हर दिन खास है
जो मेरा परिवार मेरे साथ है,

पर आज मुझे कुछ कहना है अपनी बेटी से,
मुझे गर्व है उस पर

बेटियाँ सभी के नसीब में कहां होती हैं

घर खुदा को जो पसंद आए वहाँ होती हैं,
बेटे भाग्य से होते हैं

पर बेटियाँ सौभाग्य से होती हैं।

जरूरी नहीं रौशनी, चिरागों से हो

बेटियां भी घर में उजाला करती हैं।

पराया होकर भी कभी पराई नहीं होती

शायद इसलिए कभी पिता से हंसकर बेटी की विदाई नहीं होती।

एक मीठी सी मुस्कान है बेटी

यह सच है कि मेहमान है बेटी।



हम नहीं हैं पतंगे



डॉ. सुभाष रस्तोगी

हम नहीं हैं पतंगे
कि आप हुचके से डोर को
अपनी मर्जी के मुताबिक ढील दें
और आसमान में खूब ऊँचा उड़ाएँ
पेंच लड़ाएँ
और वो काट के जश्न मनाएँ
हम जयपुरी रजाई भी नहीं हैं
कि आप दिसंबर की सर्दी में
मुँह तक ओढ़ें
और मस्त नींद सो जायें
हम बड़े सवेरे
आपको
जगाने वाली घड़ी का अलार्म भी नहीं हैं!
हम महफ़िल में गायी जाने वाली
उमरावजान की ठुमरी भी नहीं हैं
कि सुनें आप -
और मस्त - मस्त हो जाएं

हम नहीं हैं
दूर के रिश्तेदारों की
लपलपाती जीभों का स्वाद
हम भेड़ें भी नहीं हैं
कि आप लाठी से हाँके
जहाँ मर्जी ले जाएँ
हमारा पशमीना उतारें
और मौज मनाएँ
हम सिगड़ी नहीं है जनाब
कि मीठा - मीठा सुलगे
और आपके अन्तःपुर को गरमाएँ

आँचल में दूध
और आँखों में पानी
को चरितार्थ करने वाली
हम स्वनामधन्य
राष्ट्रकवि की अबलाएँ नहीं हैं।

हम इनलप का गद्दा नहीं है
जब चाहा आपने
थकान उतार दी

अब तुम हमें
कैद नहीं रख सकते
अपने रंगमहल के सीखचों में
पुराने गहने तुड़वाने
और नए गहने गढ़वाने के लिए

अब सात पर्दों में रहने वाली
रूपसियाँ भी नहीं हैं हम
जिन पर कभी - कभी
तुम लिख लेते थे
कविताएँ और कहानियाँ भी
हम दुखियारी बलत्कृत स्त्रियाँ नहीं हैं
जिनकी व्यथा तुम बाँचो पोर - पोर
और स्त्री - मुक्ति के मसीहा कहलाओ
दुनिया भर के पुरुषों
अब हम -
स्वयं हैं अपनी मसीहा
अपना रास्ता स्वयं
गढ़ती हुई!





ये आदमी

बाल बिहारी प्रजापति

हर सुबह और दोपहर की शाम है ये आदमी।
 रात भर फिर भोर का पैगाम है ये आदमी॥
 वक्त की आँधी ने पैरों को उखाड़ा इस तरह,
 था कभी मानव तो, अब दानव सा है ये आदमी॥
 चक्रव्यूह से घिरे है भाव तो अब इस कदर,
 जिन्दगी के एक पल का दाम है ये आदमी॥
 मूल्य खोजे जा रहे हम पुस्तकों के पृष्ठ में,
 हैवानियत के हाथ में नीलाम है ये आदमी॥
 फैसला कैसे करे मानव, निशाचर, देव का,
 एक पल रावण तो, एक पल राम है ये आदमी॥
 जो अगर हम मान लें, कर्त्ता जगत का है प्रभु,
 व्यर्थ ही इतिहास में बदनाम है ये आदमी ॥
 है, नशीला इस कदर आदमी व्यवस्था के लिए,
 खुद सुरा के हाथ में, एक जाम है ये आदमी।

हम हमेशा दोस्त रहेंगे

चाँद सिंह दहिया



हर सुख - दुःख में, साथ - साथ जिया करते थे।
 हार हो या जीत एक दूसरे का हमेशा साथ दिया करते थे।
 कभी हम तुमसे कभी तुम हमसे रूठ जाया करते थे।
 फिर हम तुम्हें और कभी तुम हमें मना लिया करते थे।
 एक दूसरे की खुद से ज्यादा परवाह किया करते थे।
 ये बात बस कल की ही लगती है।
 हम तुम अपनी दोस्ती पर कितना इतराया करते थे।
 बस यूँही एक दूसरे के गले लग जाया करते थे।
 यकीन नहीं होता समय के साथ हालात इतने बदल जायेंगे।
 हम अपनी अपनी दुनिया में इस कदर खो जायेंगे।
 एक दूसरे की जिंदगी में बस एक याद बनकर रह जायेंगे।
 हम ना तुमसे, ना जिंदगी से कोई शिकायत करेंगे।
 बस इस यकीन को हमेशा दिल में कायम रखेंगे।
 जब भी दिल से पुकारेंगे, तुम्हें अपने पास पाएंगे।



दो गज़लें

अमरजीत 'अमर'

एक

बस गगन की छांव में इक रेत का घर लिख दिया।
 लिखने वाले ने मेरा कैसा मुकद्दर लिख दिया॥
 मेरे सीने में जगाकर तश्नगी की आग को ।
 इन लबों के नाम पर उसने समुन्दर लिख दिया॥
 किस तरह रोकेंगे हम उस कांचघर का टूटना॥
 जिसकी किस्मत में खुदा ने सिर्फ पत्थर लिख दिया॥
 हौसला उस टिमटिमाते दीप का तो देखिए।
 जिसकी लौ की नोक पर हमने बवंडर लिख दिया॥
 आसमां बनती गई फिर यह जमीं उसके लिए।
 जिंदगी ने जिसके माथे पर भी अख्तर लिख दिया ॥

दो

परों में बिजलियां दिल में बला की गर्मियां लेकर।
 चला है वो निगाहों में नया एक आसमां लेकर॥
 निकल जाएगा सबके बीच से वो तीर की मानिंद।
 खड़े रह जाएंगे सब अपनी अपनी बर्छियां लेकर॥
 मुहब्बत का दिया हमने जलाकर जबसे रखा है।
 जमाना उस घड़ी में घूमता है आधियां लेकर॥
 अभी तो सांस लेने के लिए फुर्सत मिली ही थी।
 मुकद्दर फिर खड़ा था सामने एक इम्तहां लेकर॥
 निभाना है हमें हर हाल में कैसा भी मौसम हो।
 भला इस उम्र में जाएं कहां अब आशियां लेकर॥
 जहां जाने के डर से जिंदगी भर सो नहीं पाए।
 चले हैं दोस्त अपने आज क्यों हमको वहां लेकर॥
 खुदाया वक्त कैसा आ गया है आज हम खुद ही।
 भंवर के बीच आ पहुंचे हैं अपनी कशितयां लेकर॥



हंसगुल्ले

राजेन्द्र कुमार शर्मा



1. दो व्यापारियों की आपस में बहुत लगती थी। एक बार वो एक तंग रास्ते पर आमने सामने पड़ गये
“ मैं किसी कमीने के लिये रास्ता नहीं छोड़ता। ” एक तिरस्कारपूर्ण स्वर में बोला।
“मैं तो हमेशा छोड़ता हूँ” दूसरा बोला और एक तरफ हट गया।
2. अगर आप किसी लड़की की खामियां जानना चाहते हैं तो उसकी किसी सहेली के सामने उसकी खूबियां बयान कीजिये
3. मेरी बीवी मुझे अपने हाथ से खाना खिलाती है
“ अच्छा ”
“हां यूं उसे प्लेटें नहीं, धोनी पड़ती”
4. भयानक आंधी तूफान के मौसम में एक आदमी सड़क पर लपका चला जा रहा था।
“कहां जा रहे हो, भाई” किसी ने हमदर्दी से पूछा।
डबल रोटी खरीदने
शादी शुदा हो?
ये कोई पूछने की बात है। और क्या मेरी मां मुझे इस मौसम में डबल रोटी खरीदने भेजेगी।
5. अडोसी: जब से शादी हुई है मैं एक बार भी अपनी बीवी से नहीं बोला
पडोसी : भला क्यों?
अडोसी : भई, वो चुप करे तो बोलू न
अब क्या मैं उसे बीच में टोकू?
6. पति रात को घर पहुंचा तो पत्नी ने
पूछा – देर से क्यों आये?
क्लब में शराब पीने का मुकाबला हो गया था – पति झूमता हुआ बोला
दूसरे नम्बर पर कौन आया?
7. प्रश्न: ऐसे व्यक्ति को आप क्या कहोगे जो अपनी पत्नी को स्वर्ग की अप्सरा बताता है
उत्तर: – विधुर
8. गली में बच्चे खेल रहे थे जिनमें दो बहुत ही खूबसूरत थे
“ये बच्चे तो बड़े सुन्दर हैं”
इलाके में नये आये एक बच्चे ने कहा।
“डाक्टर जी के हैं।” – एक बच्ची नाक चढ़ाकर बोली – “बढ़िया – बढ़िया अपने पास रख लेती है”।



डायबिटीज (मधुमेह)

नरेन्द्र कुमार



आज के समय में डायबिटीज होना बहुत आम बात है। जिस तरह का आजकल लाइफस्टाइल हो गया है उसमें डायबिटीज बहुत तेजी से अपनी पकड़ बना रहा है। स्थिति यह है कि न सिर्फ अधिक उम्र के लोगों को बल्कि आज के समय में युवा और बच्चे भी डायबिटीज की चपेट में आ रहे हैं यह एक ऐसा खतरनाक रोग है, जो शरीर को धीरे-धीरे खोखला कर देता है। एक बार यह बीमारी होने पर जीवनभर इसका साथ रहता है। ब्लड शुगर बढ़ने से यह बीमारी होती है और इंसुलिन सही तरीके से काम नहीं करता है। यानी इसमें कई तरह की समस्याओं से सामना भी होता है। अगर इसको नजरअंदाज किया जाये तो शरीर के दूसरे अंग निष्क्रिय हो सकते हैं। डायबिटीज कैसे होती है, डायबिटीज के कारण क्या है, डायबिटीज के लक्षण क्या हैं, इससे कैसे बचा जा सकता है आदि जैसे सवालों के बीच में आप फंसे रहते हैं और आपको सही जवाब नहीं मिल पाता है। आज हम आपको डायबिटीज से जुड़ी हुई हर जानकारी दे रहे हैं।

डायबिटीज के कारण

यह तो आप जानते ही होंगे कि हमारे शरीर की पैंक्रियाज ग्रंथी के ठीक से काम ना करने या फिर पूरी तरह से बेकार होने से डायबिटीज हो जाती है। हालांकि डायबिटीज होने के और भी कई कारक हैं लेकिन पैंक्रियाज ग्रंथी इसका सबसे बड़ा कारण है। दरअसल पैंक्रियाज ग्रंथी से तरह-तरह के हार्मोन निकलते हैं, इन्हीं में से हैं इंसुलिन और ग्लूकोन। इंसुलिन हमारे शरीर के अन्य भागों में शुगर पहुंचाने का काम करता है। इंसुलिन द्वारा पहुंचाई गई शुगर से ही कोशिकाओं या सेल्स को एनर्जी मिलती है। डायबिटीज का कारण है इंसुलिन हार्मोन का कम निर्माण होना। जब इंसुलिन कम बनता है तो कोशिकाओं तक और रक्त में शुगर ठीक से नहीं पहुंच पाती जिससे सेल्स की एनर्जी कम होने लगती है। और इसी कारण से शरीर को नुकसान पहुंचने लगता है। जैसे-बेहोशी आना, दिल की धड़कन तेज होना इत्यादि समस्याएं होने लगती हैं। इसके अलावा नीचे बताए गए 3 कारण भी डायबिटीज होने के लिए जिम्मेदार हैं।

डायबिटीज के कारण इंसुलिन के कम निर्माण से रक्त में शुगर अधिक हो जाती है क्योंकि शारीरिक ऊर्जा कम होने से रक्त में शुगर जमा होती चली जाती है जिससे कि इसका निष्कासन मूत्र के जरिए होता है। इसी कारण डायबिटीज रोगी को बार-बार पेशाब आता है।

डायबिटीज के होने का मुख्य कारण अनुवांशिक भी होता है। यदि आपके परिवार के किसी सदस्य मां-बाप, भाई-बहन में से किसी को हैं तो भविष्य में आपको भी डायबिटीज होने की आशंका बढ़ जाती है।

जो लोग मोटापे के शिकार होते हैं उन्हें भी डायबिटीज होने का ज्यादा खतरा रहता है। आपका वजन बहुत बढ़ा हुआ है, आपका बीपी बहुत हाई है और कॉलेस्ट्रॉल भी संतुलित नहीं है तो भी आपको डायबिटीज हो सकता है। इसके अलावा व्यायाम की कमी भी डायबिटीज को निमंत्रण देती है।

क्या है डायबिटीज के लक्षण

सारा दिन थकान महसूस होगा। हर रोज भरपूर नींद लेने के बाद भी सुबह उठते ही आपको ऐसा लगना कि आपकी नींद पूरी नहीं हुई है और शरीर थका हुआ है। ये चीजें बताती हैं कि रक्त में शुगर का लेवल लगातार बढ़ रहा है।

मधुमेह होने पर बार-बार पेशाब आने लगता है। जब शरीर में ज्यादा मात्रा में शुगर इकट्ठा हो जाता है तो यह पेशाब के रास्ते से बाहर निकलता है, जिसके कारण मधुमेह रोगी को बार-बार पेशाब लगने की शिकायत शुरू हो जाती है।

मधुमेह रोगी को बार-बार प्यास लगती है। चूंकि पेशाब के रास्ते से शरीर का पानी और शुगर बाहर निकल जाता है जिसके कारण हमेशा प्यास लगने जैसी स्थिति बनी रहती है। लोग अक्सर इस बात को हल्के में ले लेते हैं और समझ ही नहीं पाते कि उनकी बीमारी की शुरुआत अब हो चुकी है।

मधुमेह रोग की शुरुआत में ही आंखों की रोशनी कम होने लगती है और धुंधला दिखाई देने लगता है। किसी भी वस्तु को देखने के लिए उसे आंखों पर जोर डालना पड़ता है।

मधुमेह रोग की शुरुआत में ही अचानक वजन तेजी से कम होने लगता है। सामान्य दिनों की अपेक्षा आदमी का वजन एकाएक कम होने लगता है।

डायबिटीज के मरीज का वजन तो कम होता है लेकिन भूख में बढ़ोतरी भी होती है। अन्य दिनों की अपेक्षा आदमी की भूख कई गुना बढ़ जाती है। बार – बार खाना खाने की इच्छा होती है।

अगर आपके शरीर में चोट या कहीं घाव लग जाए और यह जल्दी ना भरे, चाहे कोई छोटी सी खरोच क्यों ना हो वह धीरे – धीरे बड़े घाव में बदल जाएगी और उसमें संक्रमण के लक्षण साफ – साफ दिखाई देने लगेंगे।

डायबिटीज मरीज के शरीर में किसी भी तरह का संक्रमण जल्दी से ठीक नहीं होता है। अगर आपको वायरल, खाँसी – जुकाम या कोई भी बैक्टीरियल इन्फेक्शन हो जाए तो आपको राहत नहीं मिलेगी। छोटे – छोटे संक्रमण जो आसानी से खुद ठीक हो जाते हैं बड़े घाव बन जाते हैं।

मधुमेह की शुरुआत में त्वचा संबंधी कई रोग होने शुरू हो जाते हैं। त्वचा के सामान्य संक्रमण बड़े घाव बन जाते हैं।

डायबिटीज के लिए जरूरी टेस्ट

ग्लूकोज की जांच

जो लोग डायबिटीज से पीड़ित होते हैं उन्हें समय समय पर रक्त में ग्लूकोज की जांच जरूर करा लेनी चाहिए क्योंकि यदि डायबिटीज के मरीज का ग्लूकोज स्तर बढ़ता है तो रोगी के लिए ये बहुत खतरनाक हो सकता है। इसके साथ ही खून की जांच भी मधुमेह रोगियों के लिए जरूरी है इससे पता चलता है कि किडनी ठीक ढंग से काम कर रही हैं या नहीं मधुमेह में किडनी पर काफी प्रभाव पड़ता है। नियमित जांच से रोगी किडनी की समस्या से दूर रहता है।

कोलेस्ट्रॉल की जांच: कोलेस्ट्रॉल को नजरअंदाज करना भी बहुत मंहगा पड़ता है। क्योंकि मधुमेह रोगियों में कोलेस्ट्रॉल बढ़ने से हृदय रोग का खतरा दुगुना हो जाता है। रक्त में ग्लूकोज की मात्रा खराब कोलेस्ट्रॉल की गति को धीमा कर सकती है जिसकी वजह से वह चिपचिपा हो जाता है और यही कारण है जिससे कोलेस्ट्रॉल तेजी से बनने लगता है। बैड कोलेस्ट्रॉल रक्त की धमनियाँ में जम जाता है और हृदय से जुड़ी समस्या पैदा करता है।

ब्लड प्रेशर की जांच: हाई ब्लड प्रेशर 'साइलेंट किलर' के समान हैं। मधुमेह रोगियों में हाई ब्लड प्रेशर काफी घातक साबित हो सकता है। मधुमेह में हाई ब्लड प्रेशर होने से हृदय रोग, हृदयघात, किडनी वह आंखों की समस्या भी हो सकती है। इन सबसे बचने के लिए जरूरी है कि आप ब्लड प्रेशर की नियमित जांच करवाएं।

पैरों की जांच: मधुमेह में रोगियों को पैरों की समस्या हो सकती है। मधुमेह में पैरों की कोई भी समस्या होने पर इसे गंभीरता से लेना चाहिए क्योंकि इसमें पैरों की संवेदनशीलता धीरे धीरे कम होने लगती है। इसलिए पैरों में लगने वाली छोटी से छोटी चोट, संक्रमण रोगियों के लिए खतरनाक हो सकती है।

आंखों की जांच: जब रक्त में ग्लूकोज का स्तर लंबे समय तक बढ़ा हुआ रहता है तो इसका सीधा असर रेटिना पर पड़ता है। इसे रेटिनोपेथी कहते हैं। आंखों को होने वाला नुकसान आसानी से नहीं पता चलता है इसके लिए रोगी को नियमित जांच करना जरूरी है। अगर रेटिनोपेथी का जल्दी इलाज नहीं किया गया तो रोगी अंधा भी हो सकता है। कई बार मधुमेह रोगी को धुंधला दिखाई देता है। ऐसे में तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

डायबिटीज का इलाज

डायबिटीज एक ऐसा रोग है जिसका इलाज किसी दवा पर निर्भर नहीं है। यह एक लाइफस्टाइल से जुड़ा हुआ रोग है और आप अपने लाइफस्टाइल को बदलकर ही इस रोग से छुटकारा पा सकते हैं। जो लोग डायबिटीज जैसे खतरनाक रोग की चपेट में आने के बाद भी गंभीर नहीं होते हैं यानि कि मीठा खाना नहीं छोड़ते, फास्ट फूड का शौक रखते हैं, बढ़ते वजन पर ध्यान नहीं देते, व्यायाम या योग नहीं करते, शराब पीते हैं व मीठा खाना बंद नहीं करते उन लोगों के लिए जीना बहुत मुश्किल हो जाता है। जबकि अगर रोगी अपने रोग को लेकर गंभीर रहें और अपनी जीवन शैली में जरूरी बदलाव करें तो डायबिटीज से छुटकारा पाना संभव है।

डायबिटीज को कैसे रोकें

कम कैलोरी, विशेष रूप से कम संतृप्त वसा वाला आहार लेकर आप डायबिटीज की चपेट में आने से खुद को बचा सकते हैं। सब्जियां, ताजे फल, साबुत अनाज, डेयरी उत्पादों और ओमेगा - 3 वसा के स्रोतों को अपने आहार में शामिल कीजियें। इसके अलावा फाइबर का भी अधिक मात्रा में सेवन कीजिए।

जितना अधिक आप तनाव लेंगे उतना अधिक आप अस्वास्थ्यकर आदतों का पालन करेंगे शोधों से यह पता चला है कि तनाव के कारण हॉर्मोन्स का स्राव बाधित होता है और इससे रक्त में ब्लड ग्लूकोज का स्तर बढ़ता है। इसलिए तनाव से बचने के तरीके आजमायें।

ऐसा कोई सबूत नहीं है कि मधुमेह को हमेशा के लिए रोका जा सकता है। जैसे जैसे आपकी उम्र बढ़ती है, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का जोखिम भी बढ़ जाता है जो मधुमेह से जुड़े हैं। इसलिए, 45 साल की उम्र के बाद, हर साल नियमित रूप से पूर्ण स्वास्थ्य जांच कराना ज़रूरी है।

क्या हैं डायबिटीज की चुनौतियां

मधुमेह ऐसी बीमारी है जिसका असर दूसरे अंगों पर भी पड़ता है। हालांकि इस बीमारी में दूसरे अंगों में इसका असर नहीं दिखता है लेकिन अगर ब्लड में शुगर की मात्रा अधिक बढ़ जाये तो इसके कारण 5 - 10 साल में दूसरे अंग भी प्रभावित होने लगते हैं। इसके कारण गुर्दे में, पैर की नसों में कुछ खराबी आ सकती है। दिल की बीमारी के बढ़ने की संभावना सबसे अधिक रहती है। इसके कारण लकवा होने और पैर में रक्त संचार बाधित होने का खतरा अधिक रहता है। इसके अलावा कोई आर्टरी ब्लॉक होती है तो हार्ट अटैक हो सकता है। इसके अलावा ब्रेन में भी रक्त की सप्लाई बाधित होने से ब्रेन स्ट्रोक की संभावना बढ़ जाती है। यह स्थिति अचानक से नहीं आती है बल्कि यह 10 साल पुराने इतिहास के कारण होता है। इसके अलावा माइक्रोवैस्कुलर संबंधित समस्याएं होने लगती हैं, यह किडनी से संबंधित है अगर यह हो जाये तो उपचार मुश्किल हो जाता है।

डायबिटीज के लिए घरेलू नुस्खे

डायबिटीज में करेला काफी फायदेमंद होता है, करेले में कैरेटिन नामक रसायन होता है, इसलिए यह प्राकृतिक स्टेरॉयड के रूप में इस्तेमाल होता है, जिससे खून में शुगर लेवल नहीं बढ़ पाता। करेले के 100 मिली रस में इतना ही पानी मिलाकर दिन में तीन बार लेने से लाभ होता है।

मधुमेह के रोगियों के लिए मेथी बहुत फायदेमंद होता है। अगर आप रोज़ 50 ग्राम मेथी नियमित रूप से खाएंगे तो निश्चित ही आपका ग्लूकोज लेवल नीचे चला जाएगा, और आपको मधुमेह से राहत मिलेगी।

जामुन - जामुन का रस, पत्ती और बीज मधुमेह की बीमारी को जड़ से समाप्त कर सकता हैं। जामुन के सूखे बीजों को पाउडर बना कर एक चम्मच दिन में दो बार पानी या दूध के साथ लेने से राहत मिलती है।

एक चम्मच आमले का रस करेले के रस में मिला कर रोज पिएं, यह मधुमेह की सबसे अच्छी दवा है।

15 ग्राम ताजे आम को 250 एमएल पानी में रात भर भिगो कर रख दें। इसके बाद सुबह इस पानी को छान कर पी लें। इसके अलावा सूखे आम के पत्तों को पीस कर पाउडर के रूप में खाने से भी मधुमेह में लाभ होता है।

कार्बोहाइड्रेट, कैलोरी और कई तरह के माइक्रो न्यूट्रिएंट से भरपूर शहद मधुमेह के लिए लाभकारी है। शहद मधुमेह को कम करने में सहायता करता है।

**हिंदी का सम्मान, देश का सम्मान है.
हमारी स्वतंत्रता कहाँ है, राष्ट्रभाषा जहाँ है.**

बंटवारा

राजकुमार



बट्टवारे में माँ का बंटना बड़ा मार्मिक प्रसंग था।
बेटे गिद्ध का रूप लिए थे माँस नोचने पर जंग था।
झलक रही थी बेटों के चेहरो पर मदिरा की लाली।
उधर बेचारी माँ का मुखड़ा दुख चिंता से बदरंग था॥
बूढ़ी माँ घायल हो बैठी उनकी छीना झपटी में।
आँखे आँसू लिए हुए थीं, पीड़ित उसका अंग - अंग था।
सिर कफन बाँधकर जिनको जन्म दिया पाला पोसा।
आज उन्हीं संतानों का गिरगिट वाला रंग ढंग था॥
अंतिम समय काम बेटों के आऊँ तो आऊँ कैसे।
माँ का भूखा प्यासा मनवा यही सोच लेकर तंग था ॥
बूढ़ी माँ जो देना चाहती थी अपनो सतानो को।
वह साधारण देह नहीं थी ऋषि दधीचि का अंग था ॥
माँ महीने में बस एक सप्ताह, से ज्यादा नहीं ठहरेगी।
इसी शर्त पर उन चारों ने माँगा बुढ़िया का संग था ॥



अभिनंदन

दरवेश राही



भारत माँ का एक वीर
सरहद को करता चीर
पहुँचा दुश्मन की जमीं।
हर बाधा को करता पार...
हिन्द का शेर मारता दहाड़
लौट आया देखो... सरजमीं॥

करो अभिनंदन ... करो अभिनंदन ॥

वो दरियादिल है... शांति की मिसाल बना..
आज उसका कारनामा बेमिसाल बना।

जो उसने कर दिखाया.. शायद ही कोई कर पाता..
ये देश 'अभिनंदन' को पा के निहाल बना॥

करो अभिनंदन.. करो अभिनंदन॥

'राही' भारत माँ की जय का उदघोष कर..
आँखों में चमक और माहौल में जोश भर ।
बरकरार रहे हमेशा रुतबा तिरंगे का..
इस खातिर खुद को फ़नाह कर .. सरफ़रोश कर ॥

“राही” करो अभिनंदन का अभिनंदन॥
करो अभिनंदन... करो अभिनंदन

राजभाषा हिन्दी

अंकित कुमार ठाकुर



है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी-भरी ।
हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी ॥

॥ वां विश्व हिंदी सम्मेलन मॉरिशस में आयोजित किया गया। हिंदी को भावनात्मक धरातल से उठाकर एक ठोस एवं व्यापक रूप प्रदान करने के उद्देश्य से और यह रेखांकित करने के लिए कि हिंदी केवल साहित्य की भाषा नहीं, अपितु आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को अंगीकार करके अग्रसर होने में एक सक्षम भाषा है, विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया जाता रहा है।

महात्मा गाँधी द्वारा 1917 में भरूच (गुजरात) में सर्वप्रथम राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को मान्यता दी गयी तथा आज़ादी के बाद '14 सितम्बर 1949' को संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया और गौरतलब है कि संविधान सभा में कोई भी फैसला बहुमत पर ना होकर सर्वसहमति से लिया जाता था । इसके बाद 1950 में अनुच्छेद 343(1) के तहत हिंदी को देवनागरी लिपि में राजभाषा का दर्जा मिला तथा 1953 से 14 सितम्बर 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाने लगा।

हिंदी हमारी राजभाषा है लेकिन अंग्रेजी के बढ़ते चलन से आज इसका अस्तित्व खतरे में है। स्कूली शिक्षा में अंग्रेजी माध्यम का वर्चस्व है। प्रतियोगी परीक्षाओं तक ही सीमित रह जाता है। आगामी पढ़ाई के लिए छात्रों को अंग्रेजी का ही सहारा लेना पड़ता है। अंग्रेजी के वर्चस्व का एक और कारण भी है कि प्रबंधन, अभियांत्रिकी, चिकित्सा-विज्ञान से सम्बंधित अधिकांश पाठ्य सामग्री अंग्रेजी माध्यम में ही उपलब्ध हैं। हिंदी के समुचित विकास के लिए यह जरूरी है कि विश्व की अधिकांश भाषाओं का हिंदी में आवश्यकतानुसार अनुवाद करना होगा। हमें आवश्यक सामग्री की उपलब्धता बढ़ानी होगी, इसके लिए सामाजिक प्रयास भी जरूरी है। हिंदी बोलने वाले को अंग्रेजी बोलने वाले से कमतर आंकने की प्रवृत्ति छोड़नी होगी। हम सब को अपनी मातृभाषा पर गर्व करना होगा।

हमें अपने अस्तित्व के बारे में जानना होगा। हमें इस बात की फिक्र रखनी होगी की राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। हमें इतिहास से समझना होगा कि पुरातन काल से ही विश्व की अधिकांश भाषाएँ हुकूमत के बल पर आगे बढ़ी परन्तु हिंदी ही उत्तर और दक्षिण एवं पूर्व और पश्चिम को जोड़ने वाली एक समर्थ भाषा है। हिंदी भारतवर्ष में मौजूद विविधता में एकता का मार्ग प्रशस्त करती है। हिंदी वास्तव में हमारा गौरव है। तभी तो हम सब सदा से कहते चले आ रहे हैं ...

“!! हिंदी हैं हम, वतन हैं हिन्दोस्तां हमारा ॥”



गजल (जज्बात)

प्रमोद कुमार गुप्ता 'मंटू'



तुझी पे मर मिटने की कसम खाई थी जो हमने,
उसी की लाज तुम रख दो यह फरियाद करता हूँ
न जाने किस बात पे वो गुरुर-ए-शान करती है,
जब मेरा दिल धड़कता है उसे मैं याद आता हूँ
उसे मालूम है कि मैं कैसी मोहब्बत हूँ,
वो बाहर ढूँढ़ रही है चांद मैं अन्दर चांद रखता हूँ,
ऐ दुनिया वालो। तुम सुन लो मेरा जज्बात कहता हूँ,
उसका नाम है “किरन” उसी से जगमगाता हूँ



इन्डिकेटर

के.के. नंदा

(लघु कथाएं)

वह स्कूटर पर सवार सड़क पर अपने ध्यान में चला जा रहा था। मस्ती में- मुहँ में गुनगुनाता हुआ। उसे बिल्कुल ध्यान नहीं था कि वह सड़क के बीचों-बीच चला जा रहा था। उस दिन वह कॉलेज नहीं गया था। उसने कॉलेज से छुट्टी की हुई थी। उस ने सोचा कि अकेले किसी पिकनिक स्पॉट पर जा कर आराम से घूमेंगे मौज मस्ती करेंगे और पूरा दिन फ्री हो कर गुजारेगें। इसी लिए वह सुबह-सुबह उठ कर तैयार हुआ। दस बार उसने अपने आप को शीशे में देखा और बन संवर कर अपनी परसनैलिटी पर स्वयं ही गर्व करते हुए स्कूटर निकाला और चल दिया। रास्ते में एक होटल पर रुक कर उसने खाना पैक करवाया और स्कूटर पर सवार नदी की ओर जाने वाली सड़क पर अभी मुड़ा ही था कि तेजी से आता हुआ एक स्कूटर जिसे एक लड़की चला रही थी आ कर ज़ोर से टकराया। दोनों स्कूटर एक दूसरे पर गिर गए। लड़की गिरते ही ज़ोर से चिल्लाई, 'बेवकूफ पागल गधा। स्कूटर चलाना नहीं आता तो सवारी क्यों करते हो। मोड़ मुड़ते हुए क्या इन्डिकेटर नहीं दे सकते थे। स्कूटर फटा-फट अचानक मोड़ दिया' उसने कहा 'सॉरी' और फौरन लड़की को उठाने लगा। उसके पश्चात उसने लड़की का स्कूटर उठवाने में उस की मदद की। वह अपने कपड़े झाड़ते हुए बोली, मैं कॉलेज जा रही थी। पहले ही मैं लेट थी... पता नहीं अब क्या होगा।' लड़की को उठाते हुए उस का ध्यान उस की शर्ट के गले की गहराई में गया। वहाँ कागज़ की तह की हुई बहुत सी परचियां ठूँसी हुई थी।



प्यार भी तुमसे

कुलदीप कुमार मेहता

प्यार भी तुमसे
तकरार भी तुमसे
शिकवा और
मनुहार भी तुमसे
तुमसे ही
संसार है मेरा
घर भी तुमसे
बहार भी तुमसे
तुम मेरे
जीवन की शक्ति
हौंसला और
उड़ान भी तुमसे
तुमसे जाना
क्या है सृष्टि
आनंद और संतोष भी
तुमसे, तुमसे है
जीवन की लीला
नैय्या और पतवार
भी तुमसे
तुमसे जीवन
की खुशियां हैं



रिश्ते और आभार
भी तुम से
तुम न हो तो
सब और अँधेरा
सूरज की किरणें
भी तुमसे
आशा तुमसे
जीवन की परिभाषा
भी तुमसे
तुम न हो तो
जीवन क्या है
जीवन का हर सार
भी तुमसे
सहनशीलता की
तुम मूरत
मेरे सब अधिकार
भी तुमसे
संग चलना
जीवन भर मेरे
प्राणों का 'मेहता'
आधार भी तुमसे



हिन्दी दिवस-2019

संजीव कुमार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक) हरियाणा में दिनांक 14.09.2019 को हिन्दी दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। श्री विशाल बंसल, प्रधान महालेखाकार महोदय ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। माननीय प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा दीपशिखा प्रज्ज्वलित कर औपचारिक रूप से हिन्दी दिवस का शुभारम्भ किया गया। उसके पश्चात श्री प्रवीण कुमार मौर्य, उप महालेखाकार (प्रशासन) ने स्वागत भाषण द्वारा प्रधान महालेखाकार महोदय एवं वहां उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया। उप महालेखाकार (प्रशासन) ने अपने संदेश में कहा कि केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही सितम्बर माह में हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

इस अवसर पर श्री संजीव कुमार, कनिष्ठ अनुवादक के द्वारा कार्यालय में हुई राजभाषा प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जिसमें यह विशेष उल्लेख किया गया कि कार्यालय में हिंदी के प्रयोग में पिछले वर्षों में विशेष प्रगति हुई है। इस अवसर पर श्री राजेश शर्मा, वरिष्ठ लेखाकार ने माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी का संदेश पढ़ कर सुनाया।

समारोह में राजभाषा नीति के अनुसार गत वर्ष में 20000 से अधिक हिंदी के शब्दों का प्रयोग करने वाले 09 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा नकद पुरस्कार प्रदान किए गए तथा उन्हें प्रमाण पत्र देकर भी सम्मानित किया गया। कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के श्रेष्ठ तीन लेखकों को भी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार स्वरूप नकद राशि तथा सम्मान स्वरूप प्रमाण पत्र दिए गए। इस अवसर पर हिंदी भाषण व हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। सफल प्रतिभागियों को भी प्रधान महालेखाकार महोदय के कर-कमलों द्वारा पुरस्कार व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

अंत में उप महालेखाकार (प्रशा) महोदय ने अपने सम्बोधन में सभी कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने के लिए संदेश दिया। उन्होंने स्वयं भी राजभाषा हिन्दी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। समारोह के अंत में श्री राजिन्द्र कुमार भसीन, कल्याण अधिकारी ने प्रधान महालेखाकार महोदय एवं अन्य सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद दिया।

हिंदी दिवस-2019 के अवसर पर निम्न कार्मिकों को प्रधान महालेखाकार महोदय के कर-कमलों द्वारा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नकद पुरस्कार

1. नवकिरण के श्रेष्ठ लेखक (नकद पुरस्कार)

- | | |
|--|--------------------|
| 1. श्री रविन्द्र सिंह, कनिष्ठ अनुवादक | प्रथम (रु0 1200) |
| 2. श्रीमती मनजीत कौर, सहायक लेखा अधिकारी | द्वितीय (रु0 1000) |
| 3. श्री आलोक शर्मा, वरि. लेखाकार | तृतीय (रु0 800) |

2. प्रोत्साहन योजना 2018-19 (नकद पुरस्कार)

1. श्री प्रेम शंकर, सहायक लेखा अधिकारी	प्रथम (रु0 5000)
2. श्री रंजीव कुमार सिंह, लेखाकार	प्रथम (रु0 5000)
3. श्री अमित काम्बोज, लेखाकार	द्वितीय (रु0 3000)
4. श्रीमती राज शैली, वरि. लेखाकार	द्वितीय (रु0 3000)
5. श्री राज कुमार, लेखाकार	द्वितीय (रु0 3000)
6. श्री राधा कृष्ण, लेखाकार	तृतीय (रु0 2000)
7. श्री विनोद कुमार, वरि. लेखाकार	तृतीय (रु0 2000)
8. श्री सोहन लाल, वरि. लेखाकार	तृतीय (रु0 2000)
9. श्री मिनेश कुमार, लेखाकार	तृतीय (रु0 2000)

3. हिन्दी भाषण प्रतियोगिता

1. श्री प्रमोद कुमार गुप्ता, लेखाकार	प्रथम
2. श्री रविकांत मीना, सहायक लेखा अधिकारी	द्वितीय
3. श्री आलोक शर्मा, वरि. लेखाकार	तृतीय

4. हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता

1. श्री आलोक शर्मा, वरि. लेखाकार	प्रथम
2. श्रीमति मनजीत कौर, सहायक लेखा अधिकारी	द्वितीय
3. श्री राज कुमार, लेखाकार	तृतीय



हिन्दी दिवस 14 सितम्बर 2019



हिन्दी दिवस 14 सितम्बर 2019



राजभाषा हिन्दी का प्रगामी प्रयोग से संबंधित रिपोर्ट

अवनीश कुमार

सरकारी कामकाज की दृष्टि से प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा का कार्यालय 'क' क्षेत्र में आता है। चण्डीगढ़ स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग में इस कार्यालय का अग्रणी स्थान है। हरियाणा एक हिन्दी भाषी प्रदेश है। अतः राजभाषा हिन्दी स्वभाविक रूप से प्रदेश की मुख्य सम्पर्क भाषा है। कार्यालय को शत-प्रतिशत अधिकारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। राजभाषा हिन्दी का उसके गौरवशाली स्थान पर प्रतिष्ठित करने में सभी अधिकारियों, कर्मचारियों ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। पाँच वर्ष पूर्व के आंकड़े और वर्तमान स्थिति का आकलन यदि करें तो स्थिति संतोषप्रद नजर आती है और विश्वास बनता है कि प्रगति की दर यदि यही रही तो निश्चित ही शत-प्रतिशत के लक्ष्य को हम प्राप्त कर लेंगे।

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में कार्यालय में हुई प्रगति का आकलन करने हेतु सभी अनुभागों से तिमाही प्रतिवेदन प्राप्त कर उनकी समीक्षा की जाती है। पत्रिका के गत अंक में जून 2018 तक के प्रतिवेदनों की समीक्षा की गई थी। इस बार 1 जुलाई 2018 से 30 जून 2019 तक के आँकड़ों पर आधारित हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के विवरण यहाँ दिए जा रहे हैं।

इस अवधि के दौरान 29339 पत्र हिन्दी में प्राप्त हुए। इनमें से सभी पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए गए। इस प्रकार इस मद में शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल किया गया। इस अवधि में कुल 326192 पत्र जारी किए गए। इनमें से हिन्दी में कुल 316179 पत्र जारी किए गए।

इस अवधि में चार हिन्दी कार्यशालाओं जो 04 कार्यदिवसों की थी, का भी आयोजन किया गया। जिनमें 80 कर्मचारियों/अधिकारियों को सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग हेतु प्रशिक्षित एवं प्रेरित किया गया। कार्यशालाओं के अन्त में परीक्षा ली गई जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे प्रतिभागियों को उपहार देकर सम्मानित किया गया। कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग में हुई प्रगति की समीक्षा हेतु हर तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक भी आयोजित की जाती है। कार्यालय के सभी शाखा अधिकारी राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य हैं। समिति के अध्यक्ष प्रधान महालेखाकार महोदय हैं। इस अवधि में तीन तिमाही बैठकें आयोजित हुईं जिनमें पिछली तिमाही के हिन्दी प्रतिवेदनों की समीक्षा तथा भविष्य में प्रगति हेतु उपायों पर विस्तार से विचार विमर्श किया गया तथा विभिन्न सुझाव दिए गए। जिन शाखाओं/अनुभागों में हिन्दी के प्रयोग में कमी पाई गई उन शाखा अधिकारियों को प्रगति सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक सुझाव व निर्देश दिए गए।

इस अवधि में 20 अनुभागों के अभिलेखों का निरीक्षण व जाँच की गई एवं निरीक्षण रिपोर्ट के माध्यम से पाई गई कमियों व त्रुटियों से उन्हें अवगत कराया गया।

**भाषा बिना व्यर्थ ही जाता ईश्वरीय भी ज्ञान
सब दानों से बहुत बड़ा है ईश्वर का यह दान।
असंख्यक हैं इसके उपकार।
करो अपनी भाषा से प्यार**

खेल – कूद, साँस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियाँ

राजेन्द्र कुमार भसीन



प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा का कार्यालय एक उत्कृष्ट कार्यबल की पहचान बनाए हुए है। श्रेष्ठ कार्य निष्पादन में कार्यलय के कर्मचारियों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। इसे सुनिश्चित करने के लिए कार्यालय में कल्याण कक्ष की स्थापना की गई तथा खेलकूद एवं मनोरंजन क्लब भी सक्रिय है। सकारी कामकाज में कार्य – कुशलता के उच्च मानदण्ड कायम रखने के उद्देश्य से कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य के विकास के लिए विभिन्न प्रकार की खेलकूद, साँस्कृतिक एवं सामुदायिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। 'नवकिरण' के गतांक के प्रकाशन के पश्चात् आयोजित विभिन्न गतिविधियों की एक झलक यहाँ प्रस्तुत है।

1. कार्यालय परिसर में नववर्ष दिवस 01.01.2019 को मनाया गया। जिसमें सभी कार्मिकों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया।
2. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्य तिथि के अवसर पर शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में 30 जनवरी 2019 को दो मिनट का मौन रखा।
3. नागरिक सुरक्षा प्रशिक्षक का उपायुक्त सह नियंत्रक सैक्टर – 17 चण्डीगढ़ द्वारा दिनांक 22.02.2019 को आपदा प्रबंधन पर एक भाषण दिया गया।
4. कार्यालय के वार्षिक सांस्कृतिक समारोह का आयोजन दि. 13.03.2019 को टैगोर थिएटर सैक्टर – 18 चण्डीगढ़ में किया गया।
5. आई.ए.एंड.एस. परिवीक्षाधीन तथा अधिकारी क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन इस कार्यालय द्वारा दिनांक 06.04.2019 को क्रिकेट स्टेडियम, सैक्टर – 16 चण्डीगढ़ में किया गया।
6. राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय व अस्पताल, सैक्टर – 32 चण्डीगढ़ द्वारा दिनांक 07.05.2019 को कार्यालय में रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 130 कर्मचारियों ने रक्तदान किया।
7. कार्यालय में दिनांक 21 मई 2019 की आतंकवाद विरोधी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा शपथ ग्रहण की गई।
8. कार्यालय परिसर में राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में 31.10.2018 को सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती मनायी गयी।
9. **सतर्कता जागरूकता सप्ताह:** कार्यालय परिसर में दि. 29.10.2018 से 03.11.2018 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस दौरान विभिन्न चित्रकला, स्लोगन भाषण आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। तथा प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया।
10. दिनांक 19.11.2018 से 25.11.2018 तक सांप्रदायिक सद्भावना अभियान तथा निधि/धन जुटाने हेतु सप्ताह मनाया गया।

संस्कार

बेटा बड़ा आज्ञाकारी था। बड़ों की आज्ञा का पालन करना उनकी सेवा में लीन रहना वह अपना कर्तव्य समझता। वह अक्सर गुनगुनाया करता.....

‘मात पिता की सेवा से, मिल जाते हैं भगवान,
बड़ा होने पर बेटे की शादी हो गई। एक दिन बूढ़े पिता ने आवाज़ लगाई
“बेटा.....”

कोई उत्तर नहीं.....

फिर कोई उत्तर नहीं.....

तीसरी बार जोर से.....

“बेटा.....आ.....आ.....”

“क्या घंटे से बेटा – बेटा लगा रखा है। ऑफिस जा रहा हूँ देर हो चुकी है। जिस चीज की आवश्यकता हो बहू से मांग लेना” बड़े गुस्से से कहते हुए बेटा ऑफिस चला गया।

बूढ़ा पिता आंखों में आंसू लिए बड़बड़ाया.....

“संस्कार मेरे हैं या बहू के ?”

रक्त दान शिविर 2019



रक्त दान शिविर 2019



वार्षिक कार्यक्रम 'आगाज' 2019



हिंदी शब्दों के अंग्रेजी पर्याय

संजीव कुमार

अंतिम रूप	Final Touch	निरीक्षण	Inspection
अधिवेशन	Session	प्रस्तुत करना	to put up/to submit
अनापत्ति प्रमाण - पत्र	No Objection Certificate	प्रतिनियुक्ति	Deputation
अप्राधिकृत	Unauthorised	पदोन्नति	Promotion
अर्जित अवकाश	Earned leave	पदावनति	Demotion
अधिनियम	Act	पारपत्र	Passport
अवलोकन	Perusal	वेतन	Salary
अपेक्षित सूचना	Requisite Information	परिणत अवकाश	Commuted leave
अनुमति	Permission	प्रतिबंधित अवकाश	Restricted leave
अनुशासनिक कार्रवाई	Disciplinary Action	प्रतिपूरक अवकाश	Compensatory leave
अधीनस्थ	Subordinate	प्रसूति छुट्टी	Maternity leave
अग्रिम	Advance	प्रत्यावर्तन	Reversion
अभ्यावेदन	Representation	पारिश्रमिक	Remuneration
अल्प सूचना	Short Notice	प्रस्ताव	Proposal
अनुसंधान	Research	प्रतियोगिता	Competition
आवक	Inward	प्रतिलिपि सूचनार्थ	Copy of information
आयात	Import	पदों का सृजन	Creation of posts
आकस्मिक अवकाश	Casual Leave	बकाया काम	Pending work
आचरण नियमावली	Conduct Rules	बरखास्त करना	To dismiss
आचरण संहिता	Code of Conduct	भविष्य निधि	Provident fund
आदेश	Order	भुगतान	Payment
आरक्षण	Reservation	मूल प्रति	Original copy
आयकर आयुक्त	Income Tax Commissioner	महंगाई भत्ता	Dearness Allowance
औपचारिकता	Formality	मसौदा	Draft
कार्रवाई	Action	यात्रा कार्यक्रम	Tour Programme
कार्यालय पद्धति	Office Procedure	लेखा परीक्षा	Audit
कार्यालय प्रति	Office Copy	लोकहित	Public Interest
कार्यवृत्त	Minutes	लेखाकार	Accountant
कार्यसूची	Agenda	वेतन - नियतन	Pay Fixation
खिलाफ / विरुद्ध	Against	वितरण	Distribution
गोपनीय	Confidential	वार्षिक निरीक्षण	Annual Inspection
गोष्ठी	Seminar	विभागीय	Departmental
चेतावनी	Warning	वित्तीय अनुमोदन	Financial Approval
चर्चा	Discussion	वार्षिक रिपोर्ट	Annual Statement
चयन	Selection	वार्षिक विवरण	annual statement
चिकित्सा अवकाश	Medical leave	शिकायत	Complaint
छुट्टी	Retrenchment	स्थगित	Postpone
जावक	Outward	संगरोध छुट्टी	Quarantine
जाँच समिति	Enquiry committee	सिफारिशें	Recommendations
तैनाती	Posting	सहमति	Concurrence
तदर्थ	Adhoc	संस्वीकृति	Sanction
दैनिक मजदूरी	Daily wages	समिति	Committee
नियुक्ति	Appointment	सूची	List
निष्पादन	Performance	सुझाव	Suggestion
निर्णय	Decision	स्वतः स्पष्ट टिप्पणी	Self explanatory note
निलंबित करना	To suspend	हस्ताक्षर	Signature
निपटान	Disposal	ऋण	Loan
निष्ठावान	Sincere		

सेवानिवृत्ति

समय अपनी गति से चलता रहता है। जिन साथियों के साथ हम इकट्ठे कार्य करते हैं। जिनकी कार्यक्षमता और अनुभव से लाभान्वित होते हैं, उनके दूर जाने का अर्थात् सेवानिवृत्त होने का समय आ ही जाता है। इस कार्यालय में उनके द्वारा की गई सेवा तथा मार्गदर्शन के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं और उनकी दीर्घायु तथा भावी जीवन के लिए सुख – समृद्धि की कामना करते हैं।

क्र. सं.	नाम श्री / श्रीमती	पदनाम	सेवानिवृत्ति तिथि
1.	सुनेहर सिंह	व. लेखा अधिकारी	31.07.2018
2.	शिवजीत कुमार शर्मा	व. लेखा अधिकारी	31.07.2018
3.	रजिया बेगम	एम.टी.एस	31.07.2018
4.	मंजु बाला	व. लेखाकार	31.07.2018
5.	गीता भाटिया	स. लेखा अधिकारी	31.08.2018
6.	तिलक राज बग्गा	व. लेखाकार	31.08.2018
7.	राजपाल सिंह राणा	व. लेखाकार	31.08.2018
8.	जतिंद्र सिंह बाली	व. लेखा अधिकारी	30.09.2018
9.	शंभु सिंह	एम.टी.एस	30.09.2018
10.	हरिशचंद्र अदलखा	व. लेखाकार	31.10.2018
11.	मधु बंसल	व. लेखाकार	31.10.2018
12.	राजेन्द्र प्रसाद	व. लेखाकार	31.10.2018
13.	सुरबीर सिंह	व. लेखाकार	31.10.2018
14.	मंजू वोहरा	लेखा अधिकारी	30.11.2018
15.	रजनीश कुमार	पर्यवेक्षक	30.11.2018
16.	अजय शर्मा	पर्यवेक्षक	30.11.2018
17.	राजपाल सिंह	व. लेखाकार	30.11.2018
18.	गिरधारी लाल शर्मा	स. लेखा अधिकारी	31.12.2018
19.	देव अर्चना	पर्यवेक्षक	31.12.2018
20.	संतोष चोपड़ा	व. लेखाकार	31.12.2018
21.	राजेश कुमार रतन	व. लेखा अधिकारी	31.02.2019
22.	जसविंदर सिंह	व. लेखाकार	31.01.2019
23.	जसबीर सिंह	एम.टी.एस	31.01.2019
24.	बावा सिंह	एम.टी.एस	28.01.2019
25.	सरोज वत्स	व. लेखाकार	28.02.2019

क्र. सं.	नाम श्री/श्रीमती	पदनाम	सेवानिवृत्ति तिथि
26.	दीपाली सैनी	व. लेखाकार	28.02.2019
27.	सिद्धानंद	व. लेखाकार	28.02.2019
28.	पवन कुमार शर्मा	व. लेखाकार	28.02.2019
29.	अनिल कुमार संधीर	व. लेखाकार	31.03.2019
30.	अनिल कुमार जिंदल	व. लेखाकार	31.03.2019
31.	अनिला कुमारी	व. लेखाकार	31.03.2019
32.	वीना नागरी	व. लेखाकार	31.03.2019
33.	उर्मिला सराफ मुंशी	व. लेखाकार	31.03.2019
34.	कृष्ण कुमार	व. लेखाकार	30.04.2019
35.	राजपाल सिंह	व. लेखा अधिकारी	30.04.2019
36.	करम सिंह	एम.टी.एस	30.04.2019
37.	राजेन्द्रन पिल्लै के	व. लेखाकार	31.05.2019
38.	हरविन्द्र सिंह	व. लेखाकार	31.05.2019
39.	जगरूप सिंह सिंहमार	व. लेखा अधिकारी	30.06.2019
40.	मेहर चंद	व. लेखाकार	30.06.2019

श्रद्धांजलि

जब अचानक किसी साथी को हमसे किसी अदृश्य शक्ति द्वारा छीन लिया जाता है तो हमें विधि का विधान मानकर उसकी जुदाई की पीड़ा सहनी पड़ती है। अपने बिछुड़े हुए साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उस असीम शक्ति से हम उनकी आत्मा की शान्ति तथा विपदा की घड़ी में उनके प्रियजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

श्री मान/श्रीमति	निधन की तिथि
1. दिवंगत श्री राम किशन, व. लेखाकार	04.11.2018
2. दिवंगत श्री कल्याण सिंह, लेखाकार	29.01.2019
3. दिवंगत श्री मोहिन्द्र सिंह सांगवान, लेखाकार	17.04.2019

भाषा बिना व्यर्थ ही जाता ईश्वरीय भी ज्ञान, सब दानों से बहुत बड़ा है ईश्वर का यह दान। असंख्यक हैं इसके उपकार करो अपनी भाषा से प्यार ॥

सतर्कता जागरूकता सप्ताह(शपथ समारोह)



